नैतिक शिक्षा

बारहवीं कक्षा के लिए

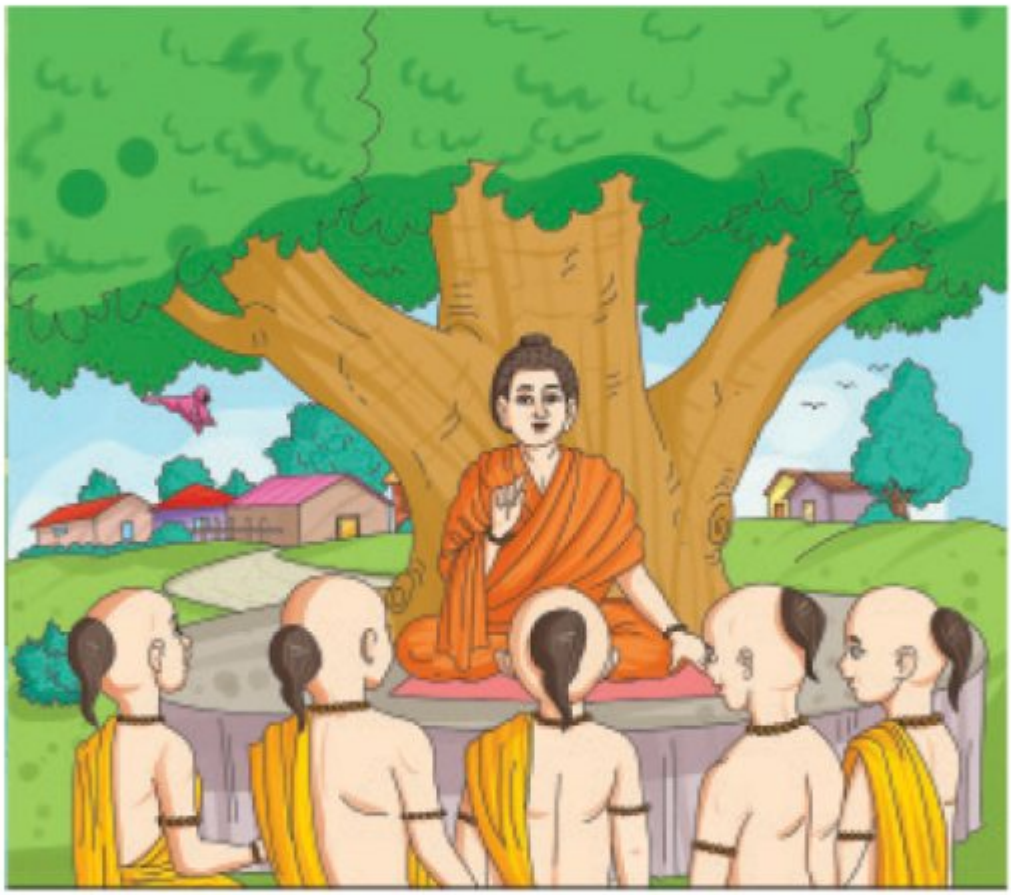

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्।

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्

शस्यश्यामलां मातरम्

वन्दे मातरम्

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्

फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्

सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्

सुखदां वरदां मातरम्

वन्दे मातरम्

आमुख

आज विश्व में विज्ञान बहुत तीव्रगति से प्रगति कर रहा है। वैज्ञानिक व औद्योगिक क्रान्तियों ने धर्म व मोक्ष की जगह अर्थ और काम पुरुषार्थ को इतना प्रबल बना दिया है कि परम्परागत जीवन मूल्यों का निरन्तर पराभव होता जा रहा है। भोगवादी संस्कृति उत्तम जीवन मूल्यों को नष्ट करने पर तुली है, जिससे लोग नैतिक मूल्यों की उपेक्षा करके स्वार्थसिद्धि में प्रवृत्त हो रहे हैं। सम्पूर्ण राष्ट्र इस विभीषिका से त्रस्त है और संशय के धरातल पर खड़ा है। वर्तमान शताब्दी एवं भविष्य के लिए यह एक बड़ी चुनौती है। शिक्षा अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाती है और हमारी दृष्टि को दिव्य बनाती है। शिक्षा ही एक ऐसा अनूठा माध्यम है, जिससे छात्र–जीवन में मूल्यों की स्थापना की जा सकती है। यह शिक्षा का बुनियादी दायित्व है कि वह जीवन को त्रिकालसम्मत मूल्यों पर आधारित करे और ऐसी शक्तियों पर अंकुश लगाए, जो इन शाश्वत व चिरन्तन मूल्यों का ह्रास करती है। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है– छात्र का चारित्रिक विकास। यह तभी सम्भव है, जब शिक्षा को नैतिकता से जोड़ा जाए। इसके लिए 'नैतिक मूल्य' आधारभूत सामग्री है। इससे जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों का विकास होगा तथा भौतिकवाद के भटकाव से समाज को बचाया जा सकेगा। साथ ही अनैतिक व अमानवीय प्रवृत्तियों पर अंकुश भी लग सकेगा, करुणा व दया के भाव प्रस्फुटित होंगे तथा मन की संवेदना का विस्तार होगा। नैतिक शिक्षा से अभिप्राय उस शिक्षा से है, जो हमारे जीवन को प्रशस्त बनाती है और हमें संस्कृति से जोड़े रखती है। शिक्षा में नैतिकता का समावेश होने पर ही समाज में व्याप्त चारित्रिक पतन से मुक्ति मिल सकती है।

नैतिक शिक्षा का परीक्षण पुस्तकों में न रहकर जीवन के आचरण में होता है। इन जीवन मूल्यों को धारण करने का उपयुक्त समय विद्यार्थी जीवन ही है। इसीको ध्यान में रखते हुए नैतिक शिक्षा पर आधारित विषयों का संकलन इस पुस्तक में किया गया है। नैतिकता मानवता की सांझी धरोहर है। नैतिक शिक्षा में विश्व का सारा चिन्तन व दर्शन समाया हुआ है। इसका सीधा सम्बन्ध व्यवहार दर्शन से है। नैतिकता का निवास शब्दों में कम और व्यवहार में अधिक होता है। सच्चे आचरण से जुड़ी नैतिक शिक्षा छद्म नहीं सिखाती है। इस पुस्तक में सूक्तियों, प्रेरक प्रसंगों आदि के माध्यम से नैतिक शिक्षा को व्यावहारिक जीवन में आकार देने का प्रयास किया गया है, जिससे हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की परम्पराएँ कायम रहेंगी और निरन्तरता व बदलाव को भी गति मिलेगी।

आशा है इस पुस्तक में आए उच्च नैतिक मूल्य विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए नेतृत्व एवं अनुयायित्व की प्रवृत्तियों का विकास कर सकेंगे। साथ ही भारत की सार्वभौमिक सांस्कृतिक धरोहर को उन तक पहुँचा सकेंगे। इसे पढ़कर वे देशभक्त, संस्कारी व प्रतिभाशाली बनेंगे। हम उन सभी लेखकों व सुधीजनों के आभारी हैं, जिन्होंने अमूल्य योगदान देकर इस पुस्तक को अपनी रचनाओं से सुशोभित किया है। सुधी पाठकों के विचार अवश्य ही इस दिशा में हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

केशनी आनन्द अरोड़ा
अतिरिक्त मुख्य सचिव, विद्यालय शिक्षा
हरियाणा, चण्डीगढ़

प्राक्कथन

आज समाज में मानसिक तनाव एवं पारिवारिक, सामाजिक व साम्प्रदायिक रूप से विलगाव दिखाई पड़ रहा है। इस विलगाव का एक कारण यह है कि हमारे विद्यार्थियों में सुसंस्कारों का अभाव होने के कारण वे नैतिक आचरण से दूर हो रहे हैं। बच्चे पारिवरिक समरसता के प्राण होते हैं। आज समाज में पारिवारिक सौहार्द व सामाजिक समरसता का अभाव अभिभावकों, प्रशासकों, नेताओं एवं सरकार के सामने सबसे बड़ी समस्या है क्योंकि वर्तमान शिक्षा विद्यार्थियों में आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव, मातृदेवो भव, पितृदेवो भव व सत्यं वद जैसे आदर्श सिद्धान्तों के भावों का संचार नहीं कर पा रही है।

इस परिस्थिति में विगत वर्षों से अभिभावक बहुत ही चिन्ताग्रस्त हैं। उनकी चिन्ता को ध्यान में रखते हुए हरियाणा सरकार के शिक्षा विभाग ने नैतिक शिक्षा विषय को पाठ्यक्रम का अंग बनाने का निश्चय किया। इसकी अनुपालना में राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद, हरियाणा, गुरुग्राम द्वारा विषय विशेषज्ञों की सहायता से नैतिक शिक्षा की पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया गया है।

नैतिक शिक्षा के अध्ययन हेतु कक्षावार अध्यापन की व्यवस्था होगी। सप्ताह में प्रतिदिन प्रार्थना–सभा के समय नैतिक शिक्षा में संकलित पाठों पर आधारित विद्यार्थियों/शिक्षकों द्वारा विचार व्यक्त किए जाएँगे। व्यक्त किए गए नैतिक मूल्यों को आचरण में लाना विभाग का प्रमुख उद्देश्य है। शिक्षा में नैतिकता के समायोजन हेतु विद्यार्थियों द्वारा नैतिकता पूर्ण आचरण का मूल्यांकन प्रणाली में अंक निर्धारित करना महत्त्वपूर्ण होगा। नैतिक शिक्षा की बोर्ड परीक्षा का दायित्व हरियाणा शिक्षा बोर्ड भिवानी का होगा। नैतिक शिक्षा विषय को पढ़ाने का दायित्व विशेषरूप से भाषा के आचार्यो/शिक्षकों का होगा। यदि इन विषयों के शिक्षको का कार्यभार अधिक हो तो अन्य विषय के अध्यापक नैतिक शिक्षा का अध्यापन कार्य करेंगे।

यह भी ध्यातव्य है कि प्रत्येक विषय के शिक्षक को यह पुस्तक उपलब्ध करायी जाए तथा यह परामर्श दिया जाए कि वे अपने विषय के अध्यापन के समय प्रसंगानुसार नैतिक मूल्यों का उपस्थापन कर विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों को जानने व उन्हें अपने आचरण में लाने के लिए प्रेरित करें।

आशा है कि सभी आचार्य/ शिक्षक नैतिक शिक्षा पुस्तक के माध्यम से मूल्यपरक सिद्धान्तों को मनोयोगपूर्वक सुव्यवस्थित प्रस्तुति के माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुँचाकर समाज के समुन्नयन हेतु योगदान देकर अपने महत्त्वपूर्ण दायित्व का निर्वहन करेंगे।

कक्षा 11वीं एवं 12वीं की पाठ्यपुस्तकों में 19–19 पाठों का समायोजन किया गया है। इन पाठों के माध्यम से ईशस्तुति, देशभक्त महिलाओं एवं पुरुषों के प्रेरक व्यक्तित्व, शाश्वत नैतिक मूल्य परक प्रसंग, जीवन मूल्य, प्रेरक कहानी, पर्यावरण एवं उल्लेखनीय व्यक्तित्वपरक पाठों के माध्यम से विद्यार्थी को नैतिक गुणों से सम्पन्न करने का मुख्य उद्देश्य रखा गया है।

इस पुस्तक के निर्माण में परमश्रद्धेय गीतामनीषी स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी महाराज, माननीय श्री दीनानाथ बत्रा, अध्यक्ष, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, प्रो0 श्रीधर वासिष्ठ, पूर्वकुलपति, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठ (मानितविश्वविद्यालय) नई दिल्ली, प्रो0 चाँदकिरण सलूजा, सेवानिवृत्त आचार्य, केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली सहित समस्त पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के विद्वानों, चित्रकार फजरुददीन, टंकणकर्ता सुनील गोयल एवं हरीश कुमार के प्रति परिषद् आभार ज्ञापित करती हुई सुधी पाठकों से आवश्यक सुझावों का सादर सम्मान करने के लिए तत्पर है। आशा है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों को संस्कारवान् बनाने में अत्यन्त उपयोगी होगी।

एम एल कौशिक

निदेशक

माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा, पंचकूला

पुस्तक–निर्माण–समिति

संरक्षक

श्रीमती केशनी आनन्द अरोड़ा, अतिरिक्त मुख्य सचिव, विद्यालय शिक्षा, हरियाणा, चण्डीगढ़।

श्री एम एल कौशिक, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा, पंचकूला।

श्री धीरेन्द्र खड़गटा, सचिव, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी

मार्गदर्शन

श्रीमती स्नेहलता, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा, गुड़गाँव।

डॉ० किरणमयी, संयुक्त निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा, गुड़गाँव।

श्री रवीन्द्र फौगाट, अध्यक्ष, पा.पु.विभाग, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा, गुड़गाँव।

परामर्श

प्रो० श्रीधर वासिष्ठ, पूर्वकुलपति, श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली।

प्रो० कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, अध्यक्ष भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

प्रो० तेजपाल शर्मा, पूर्व आचार्य, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी ओडिशा

डॉ० मुहम्मद हनीफ खान, सहाचार्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली।

समन्वयक व सम्पादक

डॉ० श्रेयांश द्विवेदी, विषयविशेषज्ञ, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा, गुड़गाँव।

श्री ललित कुमार, विषयविशेषज्ञ, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा, गुड़गाँव।

लेखक मण्डल

श्री चन्द्रप्रकाश, सेवानिवृत्त मुख्याध्यापक, भिवानी।

डॉ० राजवन्ती, प्राध्यापिका संस्कृत, रा.क.व.मा.विद्यालय, भालौट, रोहतक।

श्री अशोक कुमार, प्राध्यापक संस्कृत, रा.व.मा.विद्यालय, कायला, भिवानी।

श्री करतारचन्द, प्राध्यापक संस्कृत, रा.व.मा.विद्यालय, दड़ौली, हिसार।

श्री अनिल कुमार, प्राध्यापक संस्कृत, रा.क.व.मा.विद्यालय, लांधड़ी, हिसार ।

श्री सुभाष कुमार, प्राध्यापक संस्कृत,रा.व.मा.विद्यालय, खडालवा, कैथल।

श्री सुनीलदत्त, प्राध्यापक संस्कृत, रा.व.मा.विद्यालय, कमालपुर, कैथल।

श्री बिजेन्द्र सिंह, प्राध्यापक संस्कृत, रा.व.मा.विद्यालय, कवी, पानीपत

डॉ० सुखदा, अध्यापिका संस्कृत, रा.क.उ.विद्यालय, चुलियाना, रोहतक।

श्रीमती सरला शर्मा, अध्यापिका हिन्दी, रा.व.मा.विद्यालय, दड़ौली, हिसार।

विषय-सूची

1.	ईश वन्दना	7
2.	भक्तियोग	9
3.	सूक्ति सौरभ	12
4.	हवलदार अब्दुल हमीद	16
5.	अष्टादश श्लोकी गीता	18
6.	दुर्गा भाभी	22
7.	विज्ञानाचार्य डॉ. जगदीश चन्द्र बसु	25
8.	अहिंसा के साधक महात्मा बुद्ध	28
9.	मदन लाल ढींगरा	32
10.	शाश्वत नैतिक मूल्य	36
11.	गोस्वामी तुलसीदास	40
12.	संगठन–सूक्त	42
13.	लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल	44
14.	करतार सिंह सराबा	46
15.	तीन मछलियाँ	48
16.	स्वच्छता	50
17.	हेमचन्द्र विक्रमादित्य	54
18.	जगत् की उत्पत्ति	57
19.	पारस्परिक सद्भावना	61

पाठ 1 ईश वन्दना

1. **ऊँ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।**
यद्भद्रं तन्न आ सुव ।।

तू सर्वेश सकल सुखदाता, शुद्ध स्वरूप विधाता है ।
उसके कष्ट नष्ट हो जाते, जो तेरे ढिग आता है ।।
सारे दुर्गुण दुर्व्यसनों से, हमको नाथ बचा लीजे ।
मंगलमय गुण कर्म पदार्थ, प्रेम सिन्धु हमको दीजे ।।

2. **ऊँ य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।**
यस्यच्छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

तू ही आत्मज्ञान बलदाता, सुयश विज्ञ जन गाते हैं ।
तेरी चरण–शरण में आकर, भव–सागर तर जाते हैं ।।
तुझको ही जपना जीवन है, मरण तुझे बिसराने में ।
मेरी सारी शक्ति लगे प्रभु, तुझसे लगन लगाने में ।।

3. **ऊँ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परि ता बभूव ।**
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।
तुमसे भिन्न न कोई जग में, सब में तू ही समाया है।
जड़ चेतन सब तेरी रचना, तुझमें आश्रय पाया है ।।
हे सर्वोपरि विभो! विश्व का, तूने साज सजाया है।
हेतु रहित अनुराग दीजिए, यही भक्त को भाया है ।।

4. **ऊँ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।**
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ।।
तू ही स्वयं प्रकाश सुचेतन, सबका सिरजन हार तू ही।
रसना निशिदिन रटे तुम्ही को, मन में बसना सदा तू ही।।
कुटिल पाप से हमें बचाते, रहना हरदम दया निधान ।
अपने भक्त जनों को भगवन्, दीजे यही विशद वरदान ।।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. रिक्त स्थान भरिए

(क) .....सवितः.....परासुव।
यद्भद्रम् ..... आ .....।।

(ख) .....सुपथा .....अस्मान् .....देव ..... विद्वान्।
..... भूयिष्ठां .....विधेम।।

भावात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. प्रथम मन्त्र में क्या प्रार्थना की गई है ?

प्रश्न 2. दूसरे मन्त्र में ईश्वर से लगन लगाने की बात क्यों कही गई है ?

प्रश्न 3. मन्त्र तीन में ईश्वर की क्या–क्या विशेषताएँ बताई गई हैं ?

प्रश्न 4. भक्तों ने ईश्वर से जो वरदान माँगे हैं, उनको विस्तार से लिखिए ?

क्रियात्मक

प्रश्न 1. अध्यापक छात्रों को मन्त्रों का सस्वर शुद्ध उच्चारण एवं भावार्थ स्पष्ट करके, मौखिक रूप से याद करने के लिए प्रेरित करें ।

पाठ 2 भक्तियोग

गीता में ज्ञान, कर्म और उपासना तीनों का अद्‌भुत संगम है। गीता इहलोक और परलोक दोनों को सुधारने का एवं जीवन जीने का रास्ता बतलाती है। ज्ञान, कर्म तथा उपासना का गहरा सम्बन्ध है। ज्ञान–पूर्वक श्रेष्ठ कर्म करते हुए भगवद् भक्ति की ओर बढ़ते जाना भारतीय जीवन–दर्शन है। यह मनुष्य को ही वरदान मिला है कि वह अपने को जानकर परमात्मा और मुक्ति को प्राप्त करे। संसार में वे लोग बड़े भाग्यशाली होते हैं, जो सच्चे अर्थों में धर्म, भक्ति, साधना और अध्यात्म–मार्ग के पथिक बनते हैं। इसी बात का कठोपनिषद् में सुन्दर शब्दों में चित्रण किया गया है–

एतदालम्बनं श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम् ।
एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते ।।

अर्थात् परमात्मा का आश्रय श्रेष्ठ है, उसी का सहारा परम उत्तम है और उसी के सहारे को प्राप्त करके मनुष्य ब्रह्मलोक में महत्त्व प्राप्त कर लेता है।

गीता में भक्ति–योग का सीधा सरल एवं व्यावहारिक दैनिक जीवनोपयोगी मार्ग बताया गया है। जब हम भोजन करते हैं, तब हमें नित्य प्रभु का धन्यवाद एवं प्रार्थना अवश्य करनी चाहिए। वही हमारा सच्चा गुरु है, उस की सच्ची भक्ति करना ही भक्ति–योग है। गीता सच्चे भक्त की पहचान बताती है–

अद्वेष्टा सर्वभूतानां, मैत्रः करुण एव च ।

निर्ममो निरहंकारः, समदुःखसुखः क्षमी ।।

अर्थात् जो व्यक्ति किसी प्राणी से द्वेष नहीं करता है, जो सबका मित्र है और सबसे प्रेम करता है, जो अहंकार और मोहमाया आदि से रहित है, जो सबके प्रति दया, करुणा व प्रेम रखता है, जो सुख–दुःख में समभाव से रहता है। क्षमाशील व्यक्ति ही सच्चे अर्थों में भगवान् का भक्त है।

जो मनुष्य भगवान् पर पूर्ण आस्था न रखकर सांसारिक सम्पदाओं से ही सब कुछ प्राप्त करना चाहते हैं, उनके विषय में कवि भर्तृहरि जी कहते हैं–

केचिद् वदन्ति धनहीन जनो जघन्यः,

केचिद् वदन्ति बलहीन जनो जघन्यः।

व्यासो वदत्यखिलशास्त्रविदां वरेण्यः,

नारायणस्मरणहीनजनो जघन्यः ।।

अर्थात् कुछ कहते हैं कि धन से रहित मनुष्य निन्दनीय है, कुछ कहते हैं कि बल से हीन मनुष्य निन्दा के योग्य है, किन्तु कविवर वेदव्यास जी कहते है कि परमात्मा को याद न करने वाला मनुष्य ही सबसे अधिक निन्दनीय होता है। कहने का आशय यह है कि मनुष्य के जीवन में परमात्मा की भक्ति सर्वोपरि है। भक्ति भाव को श्रेष्ठ बताते हुए रहीम भी कहते हैं–

अमरबेलि बिन मूल की प्रतिपालत है ताहि।

रहिमन ऐसे प्रभुहिं तजि खोजत फिरिए काहि।।

अर्थात् जो परमात्मा बिना जड़ की अमर बेल को पालता है, ऐसे प्रभु को छोड़कर तुम किसको खोजते हो? उस प्रभु की भक्ति करो, उसका सहारा पकड़ो अन्य किसी का सहारा पकड़ने की आवश्यकता नहीं है।

आज संसार परमात्मा की भक्ति के अनेक तरीके अपना रहा है किन्तु अन्तःकरण तक भक्ति नहीं पहुँच पा रही है। दिखावटी भक्ति से भावशुद्धि तथा हृदय परिवर्तन नहीं हो पा रहा है। इसी कारण जीव एवं जगत् में वास्तविक सुधार, उत्थान, निर्माण आदि नजर नहीं आ रहे हैं। मनुष्य दुर्व्यसनों, दुर्गुणों, बुराइयों और अहंकार–भरे मन से भक्ति कर रहा है, जिसका फल सुखदायक नहीं होता है। इसके विपरीत भक्ति जब ज्ञान और वैराग्य युक्त मन से की जाती है, तभी फलवती तथा आनन्ददायक होती है। हम बातें तो भगवद् भक्ति की करते हैं और प्यार धन–सम्पदा एवं संसार से करते है। मनुष्य दूसरों को धोखा दे सकता है, स्वयं को धोखे में रख सकता है, परन्तु भगवान् को धोखा नहीं दे सकता। आज हम परमात्मा को शब्दों से ठगना चाहते है। सच्चाई यह है कि ऐसे लोग अपने पाप के बोझ को ही बढ़ा रहे हैं, जिनकी भक्ति में सच्चाई, धार्मिकता तथा आध्यात्मिकता होती है, उनके जीवन और कर्म सुगन्धित हो जाते हैं। परमात्मा पर आस्था रखने वाला मनुष्य कभी दुःखी नहीं हो सकता। प्रभु कभी किसी का बुरा नहीं करता। ईश्वर जो कुछ करता है वह अच्छा ही करता है। इस बात को एक कथानक से समझिये–

एक बार राजा और मन्त्री किसी भयानक वन में शिकार करने के लिए चले गए। वन मे शिकार पर वार करते समय राजा की अंगुली कट गई। राजा ने मन्त्री को बताया कि हमारी एक अंगुली शस्त्र–प्रहार से कट गई। मन्त्री ने उत्तर दिया, ईश्वर जो करता है अच्छा ही करता है। राजा को यह सुनकर बहुत बुरा लगा, कहा –हमारी अंगुली कट गई, हमें कष्ट हो रहा है, आप कह रहे हैं कि अच्छा ही हुआ। राजा ने मन्त्री को तुरन्त बर्खास्त कर दिया ।

कुछ दिनों बाद राजा शिकार करते–करते दूसरे राज्य की सीमा में पहुँचा। वहाँ के राजा को एक स्वस्थ पुरुष की बलि देनी थी, अतः राजा के दूत ऐसे व्यक्ति की ही खोज कर रहे थे। दूतों ने राजा को पकड़ लिया। पकड़कर वे अपने राजा के पास ले गये। वहाँ के पण्डितों ने जब राजा को देखा तो उन्होंने एक अंगुली कटी

पायी। पण्डितों ने राजा को कहा– इस मनुष्य की बलि नहीं दी जा सकती, क्योंकि इसकी एक अंगुली कटी हुई है। इस कारण राजा वहाँ से छूट गया। अब राजा अपने राज्य की ओर चल पड़ा, मार्ग में राजा सोचता रहा कि यदि आज अंगुली न कटी होती तो मेरी बलि दे दी जाती। मन्त्री ने सच ही कहा था कि ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है। राजा ईश्वर को धन्यवाद देता हुआ अपने राजमहल में पहुँचा। राजा ने महल में पहुँचते ही मन्त्री को बुलवाया। सन्देश मिलने पर मन्त्री डरते–डरते राजमहल पहुँचा वह सोच रहा था कि न जाने राजा कौन–सा दण्ड देंगे। परिस्थिति इसके विपरीत मिली। राजा ने मन्त्री से कहा–कि आपका कहना ठीक था कि ईश्वर जो करता है, वह अच्छा ही करता है। ऐसा कहकर राजा ने आप–बीती घटना बताई। लेकिन राजा के मन में एक जिज्ञासा थी, उसने मन्त्री से पूछा कि आप एक बात बताएँ– जब मैंने आपको मन्त्री पद से हटा दिया तो ईश्वर ने क्या अच्छा किया ? मन्त्री ने उत्तर दिया– महाराज! यदि आप मुझे न निकालते तो मेरे प्राणों की रक्षा नहीं हो पाती। राजा ने पूछा वह कैसे ? मन्त्री बोला, आपके न निकालने पर मैं शिकार के लिए आपके साथ जाता। आपको तो पण्डितों ने अंग–भंग वाला कह कर छोड़ दिया। लेकिन मैं तो अंग–भंग वाला नहीं था। मेरी बलि अवश्य दी जाती। ईश्वर ने मुझे मन्त्री पद से हटवाकर मेरी प्राण रक्षा की। राजा मन्त्री की बात सुनकर बहुत खुश हुआ और उसे पुनः मन्त्री पद पर रख लिया।

उपर्युक्त कथानक से हमें शिक्षा मिलती है कि ईश्वर पर पूर्ण विश्वास करके, सच्चे मन से भक्ति करके मनुष्य अपने जीवन में परम आनन्द को पा लेता है तथा दुःखो से छुटकारे के साथ–साथ शान्ति को प्राप्त करता है।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. गीता में किस–किस का अद्‌भुत संगम है ?
2. भारतीय जीवन– दर्शन से क्या अभिप्राय है ?
3. सच्चे भक्त की पहचान क्या होती है ?
4. राजा ने मन्त्री को "पद" से क्यों हटाया ?
5. राजा की बलि क्यों नहीं दी गयी ?

भावात्मक प्रश्न

1. "अमरबेल" के विषय में कवि क्या कहते हैं ?
2. 'अद्वेष्टा' इसका भावार्थ समझाइये।
3. भर्तृहरि ने भक्तिहीन पुरुष को निन्दनीय क्यों माना है?
4. वेद व्यास जी ने मनुष्य के लिए क्या उपदेश दिया है ?
5. प्रस्तुत पाठ से क्या शिक्षा मिलती है ?

क्रियात्मक

1. अध्यापक प्रस्तुत पाठ के माध्यम से तथा अन्य कथानक के द्वारा परमात्मा के प्रति विश्वास जगाने की कोशिश करें, प्रश्नोत्तर शैली से छात्रों में आत्मविश्वास जगाएँ।
2. प्रभु–भक्ति का सरल उपाय बताकर स्वयं प्रयोग करके दिखाए तथा छात्रों से करवाएँ।

पाठ 3 सूक्ति सौरभ

सूक्ति का सामान्य अर्थ है, अच्छी उक्ति अर्थात् वे उक्तियाँ जो मनुष्य को जीवन में अच्छा बनने या अच्छा करने के लिए प्रेरित करें। सूक्तियाँ साहित्य का उत्कृष्ट रूप हैं, चाहे वे किसी भी भाषा की हों या फिर किसी भी धर्म की हों। साररूप में सूक्तियों की प्रतिष्ठा चिरकाल से चली आ रही है। शताब्दियों से चली आ रही, मानव अनुभव तथा गम्भीर चिन्तन के सूत्र रूप में, ये सूक्तियाँ मानव जीवन को अपनी अमृतमयी वाणी से प्रेरित कर उनकी जीवन दृष्टि को निर्मल कर देती हैं। सूक्तियाँ गागर में सागर भर देतीं हैं। जिनका दिग्दर्शन आगे दी जा रही सूक्तियों से सहज में हो जाता है।

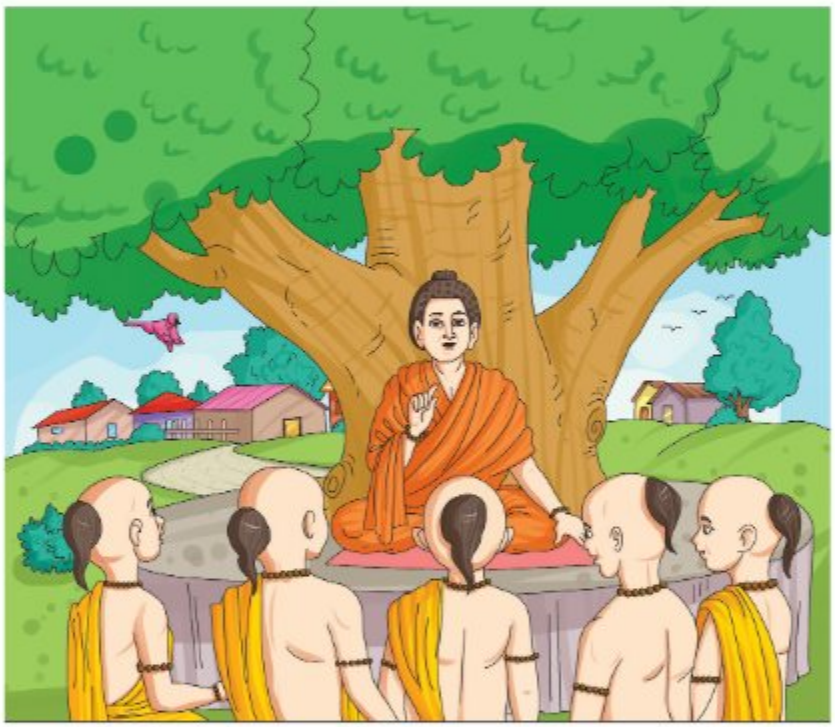

1. **मात्र तिष्ठः पराङ्मनाः।** *अथर्व0 8.1.9*

   भाव – हे मनुष्य! इस संसार में कर्म से विमुख होकर मत रहो।

   हे मानव! उदार बनकर सम्मान के साथ जीवन यापन करो।

2. **सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे ।** *यजु0 34/55*

   भाव – मानव शरीर में सात ऋषि विद्यमान हैं अर्थात् हमारा शरीर एक यज्ञशाला है। यह ऋषियों का आश्रम है। हम अपनी आँखों से अच्छा देखें, कानों से अच्छा सुनें, नासिका से ओ३म् का जप करें, मुख से अभद्र वचन न बोलें। मन से शिवसंकल्प करें, बुद्धि से दृढनिश्चय करें। इस प्रकार हम इसे ऋषियों का आश्रम बनाएँ। अभद्र दर्शन से, बुरा सुनने से, विषय वासनाओं की गन्ध लेने से अण्डा, माँस, शराब आदि के सेवन से यह शरीर नष्ट हो जाएगा।

3. **ऋषिः स यो मनुर्हितः ।** *ऋ0 10/26/5*

भाव – मनुष्यों के हितकारी को ऋषि कहते है अर्थात् ऋषि कौन है? किसी ने कहा मन्त्रद्रष्टा को ऋषि कहते हैं, किसी ने कहा तत्व द्रष्टा को ऋषि कहते है परन्तु वेद ने कहा– ऋषि वह जो मानव कल्याण के लिए शुभ चिन्तन करे।

4. **अप्रतीतो जयति सं धनानि।** *ऋ0 4/50/9*

भाव – पीछे पग न हटाने वाला ही धनों को जीतता है अर्थात् जो मनुष्य संकल्प के धनी है, वे जीवन में आगे बढ़कर पीछे नहीं हटते। ऐसे मनुष्य ही ऐश्वर्यवान् होते हैं। जिनमें उद्योग करने की शक्ति होती है, धैर्य और उत्साह होता है, सारे सौभाग्य व ऐश्वर्य उनके चरणों में लोटते हैं।

5. **मुसीबतें टूट पड़ें, हाल बेहाल हो जाए, तो भी जो लोग निश्चय से नहीं डिगते और धीरज रखकर चलते हैं, वे ही सच्चे धैर्यशाली हैं।** *(कुरान शरीफ)*

6. **अकर्त्तव्यं न कर्त्तव्यं प्राणैः कण्ठगतैरपि ।**

कर्त्तव्यमेव कर्त्तव्यं प्राणैः कण्ठगतैरपि ।।

भाव – जो कार्य करने योग्य नही है, उसे प्राणों का संकट होने पर भी नहीं करना चाहिए तथा जो करने योग्य है उसे प्राण देकर भी करना चाहिए। महात्मा बुद्ध ने भी कहा है कि– जो कर्त्तव्य को छोड़कर अकर्त्तव्य करते हैं उनका चरित्र मलिन से मलिनतर हो जाता है। अतः हमें अपने जीवन में करने योग्य कार्यों को अवश्य करना चाहिए।

7 **कृते च प्रतिकर्त्तव्यमेष धर्मः सनातनः ।**

भाव – जो उपकार करे उसका प्रत्युपकार अवश्य करना चाहिए, यही सनातन व पुरातन धर्म है अर्थात् उपकार मानव जीवन में श्रेष्ठ कर्म है। ईश्वर का नाम लेना, नीति धर्मानुसार चलना, सबसे प्रेम करना, सभी के लिए हित चिन्तन करना, सभी की सहायता करना इसे ही परमार्थ कहा जाता है, और ऐसे कार्य करने वालों का कभी अपकार नहीं करना चाहिए।

8. **मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव।**

भाव – हमारे लिए माता देवतुल्य है। पिता देवतुल्य है । आचार्य देवतुल्य है। अतिथि देवतुल्य है। ऐसा मानना चाहिए। तैत्तिरीय उपनिषद्

9. **कासां हि नापदां हेतुरति लोभान्धबुद्धिता – कथासरित्सागर**

भाव – अधिक लोभ से बुद्धि का अन्धा हो जाना, किन मुसीबतों का कारण नहीं है। भाव यह है कि लोभ सभी प्रकार की विपत्तियों का कारण है अर्थात् लोभ से मानव नीच कर्म में प्रवृत्त हो जाता है। लोभ सभी पाप कर्मों की जड़ है। लोभ के कारण मानव तरह–तरह के अनर्थ कर लेता है। अतः बुद्धिमान् व्यक्ति को लोभ त्याग देना चाहिए।

10. **सत्य, प्रेम तथा अच्छाई के मार्ग की बाधाओं को पार करने का सामर्थ्य आध्यात्मिकता ही प्रदान कर सकती है।** *(डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन्)*

11. **योषितो नावमन्येत ।** *विष्णुपुराण 3/12/30*

भाव – नारियों का अपमान न करें अर्थात् नारी जगत् निर्मात्री है, इसके बिना सृष्टि की रचना अकल्पनीय है। इसलिए शास्त्रों में इसे देवी माना गया है।

12. **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।**

भाव – जहाँ नारियों का सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते हैं अर्थात् घर में नारियों के प्रसन्न रहने पर घर के सभी सदस्य भी प्रसन्न रहते हैं। इसके अभाव में सब कार्य निष्फल हो जाते हैं।

13. **करें नियम से कर्म सब, धृति धर्म अनुसार,**
वेश स्वच्छ सुसभ्य हो, यही है शिष्टाचार। *भक्तिप्रकाश' स्वामी सत्यानन्द*

14. **पावं चजन्ति सन्तो नापि धम्मं।** *महासूत्र सोमजातक*

भाव – सन्त जन प्राणों का त्याग कर देते हैं, किन्तु धर्म का नहीं ।

15. **जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।** *रामायण*

भाव – माता और मातृ–भूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं अर्थात् माता असह्य कष्टों को सहन कर मानव जीवन का सृजन करती है। उसी तरह मातृभूमि तरह–तरह के श्रेष्ठ भोग्य पदार्थ देकर मानव जीवन को सार्थकता प्रदान करती है। इसलिए श्री रामचन्द्र जी रामायण में माता और मातृभूमि को स्वर्ग से भी महान् बताते हैं।

16. **विवेक भ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः।** *भर्तृहरि नीतिशतक 10*

भाव – विवेक से रहित मनुष्यों का सैकड़ों प्रकार से पतन होता है अर्थात् मनुष्य को जीवन पथ में सहसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए। उसे सभी कार्य विवेक से करने चाहिए क्योंकि विवेक रहित मनुष्य विपत्तियों में पड़कर जीवन को नष्ट कर लेता है।

17. **'बिनु सत्संग विवेक न होई।'** *रामचरितमानस*

18. **जैसे शीतल सलिल से, शुचि शीतल हो अंग।**
शुचि शीतल मन को करें, ऐसे सन्त सुसंग।। *भक्ति प्रकाश, स्वामी सत्यानन्द*

19. **स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः ।** *भगवद्गीता 18/45*

भाव – अपने–अपने उचित कर्म में लगा हुआ मानव सिद्धि को प्राप्त कर लेता है अर्थात् मानव के लिए सभी कर्म श्रेष्ठ हैं। कर्म कभी छोटा या बड़ा नहीं होता। यथास्थिति वर्तमान में निष्ठापूर्वक अपने काम को करते रहना चाहिए क्योंकि शास्त्रविहित कर्म करने से मानव को सफलता प्राप्त होती है।

शब्दार्थ

पराङ्मना	–	कार्य से विमुख
प्रतिहिता	–	विद्यमान
योषितः	–	नारियाँ।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. ऋषि किसे कहते हैं ?
2. धैर्यशाली किसे कहा गया है ?
3. हमें कैसे रहना चाहिए ?
4. सनातन धर्म से क्या अभिप्राय है ?

भावात्मक प्रश्न

1. मानव शरीर में ऋषियों की कल्पना किस रूप में की गई है ?
2. जननी व जन्मभूमि को स्वर्ग से बढ़कर क्यों माना गया है ?
3. विवेक से हीन व्यक्ति का पतन किस प्रकार से होता है ?
4. अत्यधिक लोभ के क्या दुष्परिणाम होते हैं ?

क्रियात्मक

1. अध्यापक छात्रों से सूक्तियों का वाचन करवाते हुए अन्य भाषाओं की सूक्तियों से अवगत करवायें।
2. पाठ में दी गई सूक्तियों की प्रसंगानुसार सूची बनवाकर सूक्तियों में आए सद्विचारों को अपने जीवन में उतारने हेतु प्रेरित करें।

स्वर्ग की कल्पना

अच्छा होता, दुख न कभी होता, सुख होता।
सब होते उत्फुल्ल, न मिलता कोई रोता।
उठती रहतीं सदा हृदय में सरस तरंगें।
कुचली जाती नहीं किसी की कभी उमंगें।
बजते होते घर–घर में आनन्द–बधावे।
निरानन्द मिलते न धूम से करते धावे।
सदा विहँसता जन–जन–चन्द्रानन दिखलाता।
किसी काल में कहीं न कोई मुख कुम्हलाता।।

पारिजात / 199

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' रचनावली : खण्ड–2

पाठ 4

हवलदार अब्दुल हमीद

सन् 1965 में युद्ध की तैयारी में लगे हुए पाकिस्तान ने अमेरिका से पैटन टैंक लिए। उसे इस बात का घमण्ड था कि अमेरिकी पैटन टैंकों का कोई मुकाबला नहीं कर सकता। उसे शायद ये मालूम नहीं था कि भारतीय सैनिकों के फौलादी सीने अद्वितीय क्षमता रखते हैं, जिनमें किसी भी टैंक से टकराने की हिम्मत है। सन् 1965 के भारत पाक युद्ध में यह बात सिद्ध भी हो गई।

कसूर क्षेत्र में पाकिस्तान के साथ हुए इस युद्ध में हमारे सैनिकों ने शत्रु के टैंकों से किए गए भारी आक्रमण को विफल ही नहीं किया बल्कि अपने पक्ष में भी कर लिया। हमारे सैनिकों ने शत्रु के 15 पैटन टैंकों पर कब्जा कर लिया और उससे भी अधिक टैंकों को नष्ट कर डाला और कसूर क्षेत्र की इस भूमि को पैटन टैंकों की कब्रगाह बना डाला। इस कारण से पाकिस्तान की प्रसिद्ध प्रथम आर्मड डिवीजन को मुँह की खानी पड़ी।

इस युद्ध में भारतीय सैनिकों ने बहुत ही वीरता दिखाई। व्यक्तिगत वीरता का हम यहाँ केवल एक उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। यह उदाहरण हवलदार अब्दुल हमीद का है। जिन्होंने सन् 1965 में पाकिस्तान के साथ हुए इस युद्ध में असाधारण वीरता दिखाते हुए वीरगति प्राप्त की।

अब्दुल हमीद ने शत्रु के चार पैटन टैंकों को भारतीय कम्पनी की ओर आते हुए देखा। वे अपनी जीप एक टीले के पीछे ले गये और उन टैंकों के इतने पास पहुंच गए कि उन्हें अपनी बन्दूक का निशाना आसानी से बना

सकें। नजदीकी मार से पहला टैंक नष्ट हो गया। दूसरे टैंक ने अपनी तोप की नाल अभी घुमाई ही थी कि उसे भी अब्दुल हमीद ने अपना निशाना बना डाला। तभी शत्रु की एक गोली से वह घायल हो गया। घायल अवस्था में भी उसने हार नहीं मानी और आगे बढ़ रहे तीसरे टैंक को भी नष्ट कर डाला और चौथे टैंक की ओर निशाना साधा लेकिन इस टैंक के गोले से यह वीर सदा के लिए संसार से विदा हो गया। उसकी इस बहादुरी के कारण शत्रु के पैर उखड़ गए।

15 पैटन टैंकों के चालकों ने आत्मसमर्पण कर दिया। पाकिस्तानी ब्रिगेडियर अपने कई सैनिकों सहित मारा गया। जिनके शवों को भारतीय सेना के द्वारा पूरे सैनिक सम्मान के साथ दफना दिया गया।

देश सेवा के लिए अपना जीवन बलिदान करने वाले शहीदों में अब्दुल हमीद का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाने योग्य है। ऐसे वीर सैनिक को हमारा शत–शत नमन।

इस अद्वितीय साहस, शौर्य व पराक्रम के लिए हवलदार अब्दुल हमीद को सेना का सर्वोच्च सम्मान परमवीर चक्र मरणोपरान्त प्रदान किया गया।

अब्दुल हमीद की शहादत ने यह सिद्ध कर दिया कि देश के लिए शहीद होने वाला न कोई हिन्दू है, न मुसलमान, न सिक्ख और न ईसाई। वह इन सब से ऊपर उठकर एक सच्चा भारतीय है, जो भारतीय सीमाओं की रक्षा करते हुए हँसते–हँसते अपने प्राणों की आहुति दे देता है।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. सन् 1965 के युद्ध में पाकिस्तान ने टैंक कहाँ से प्राप्त किए ?
2. पाठ में किस क्षेत्र में हुए युद्ध का वर्णन है ?
3. अब्दुल हमीद ने शत्रु के कितने टैंकों को नष्ट कर डाला ?
4. अब्दुल हमीद को मरणोपरान्त किस पदक से सम्मानित किया गया ?

भावात्मक प्रश्न

1. कसूर क्षेत्र में हुए युद्ध का वर्णन संक्षेप में करें।
2. पाकिस्तानी ब्रिगेडियर व सैनिकों के शवों का क्या हुआ ?
3. इस युद्ध का परिणाम क्या रहा ?

क्रियात्मक

अध्यापकों की सहायता से छात्र अन्य शहीदों की सूची बनाएँ।

पाठ 5 अष्टादश श्लोकी गीता

अर्जुन उवाच

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव।

न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ।।1।।

हे केशव! मैं लक्षण भी विपरीत ही देख रहा हूँ तथा युद्ध में अपने लोगों को मार कर कल्याण भी नहीं देखता ।

श्रीभगवानुवाच

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय।

सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ।। 2।।

हे धनंजय! तू आसक्ति को त्याग कर तथा सिद्धि और असिद्धि में समान बुद्धि वाला होकर योग में स्थित हुआ कर्मों को कर। समत्वभाव को ही योग कहा जाता है।

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।

इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ।। 3।।

जो मूढबुद्धि पुरुष समस्त इन्द्रियों को हठपूर्वक (ऊपर से) रोककर उन इन्द्रियों के भोगों को मन से चिन्तन करता रहता है, वह मिथ्याचारी अर्थात् पाखण्डी कहा जाता है।

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।

ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ।। 4।।

इन्द्रियों को नियन्त्रण में रखनेवाला श्रद्धावान् पुरुष ज्ञान को प्राप्त करता है। तथा ज्ञान को प्राप्त कर वह बिना विलम्ब के तत्क्षण ही परम शान्ति को प्राप्त हो जाता है।

यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः।

विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ।। 5।।

जिसने इन्द्रियों, मन और बुद्धि पर विजय प्राप्त कर ली है ऐसा मोक्षपरायण मुनि इच्छा, भय और क्रोध से रहित हो जाता है, वह सदा मुक्त ही है।

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।

युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ।। 6।।

उपयुक्त आहार–विहार, तथा सभी कर्मों में यथायोग्य चेष्टा करने वाले और यथायोग्य शयन करने तथा जागने वाले के लिए यह योग दुःखनाशक सिद्ध होता है।

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ।। 7।।

मेरी यह अद्भुत् त्रिगुणमयी माया बड़ी दुस्तर है, जो लोग मुझको निरन्तर भजते हैं, वे इस माया के पार हो जाते हैं।

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्।

तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः।। 8।।

जिस मार्ग में ज्योतिर्मय अग्नि, दिन, शुक्लपक्ष और उत्तरायण के छह महीने हैं, उस मार्ग मे मर कर गए ब्रह्मवेत्ता योगीजन ब्रह्म को प्राप्त होते हैं।

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।

साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ।। 9।।

यदि कोई अतिशय दुराचारी भी अनन्यभाव से मुझे निरन्तर भजता है, तो वह भी साधु ही मानने योग्य है क्योंकि वह यथार्थ निश्चय वाला है, अर्थात् उसने भलीभाँति निश्चय कर लिया है कि परमेश्वर के भजन के समान अन्य कुछ भी नही है।

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम्।

असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।10।।

जो मुझे अजन्मा (जन्मरहित) और अनादि तथा लोकों का महान् ईश्वर रूप से जानता है, वह मनुष्यों में ज्ञानवान् पुरुष सभी पापों से मुक्त हो जाता है।

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः संगवर्जितः।

निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ।।11।।

हे अर्जुन! जो पुरुष मेरे लिए यज्ञ, दान और तप आदि सम्पूर्ण कर्तव्य कर्मों को करने वाला है, मेरे परायण है, तथा मेरा भक्त है, अर्थात् मेरे नाम, गुण, प्रभाव, और रहस्य के श्रवण, कीर्तन, मनन, ध्यान का प्रेमभाव से अभ्यास करने वाला है, आसक्ति रहित है और सम्पूर्ण प्राणियों के प्रति वैरभाव से रहित है, ऐसा भक्ति वाला पुरुष ही मुझे प्राप्त होता है।

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।

ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् ।।12।।

तत्त्व को जाने विना किए गए अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है और परोक्ष ज्ञान से मुझ परमेश्वर के रूप का ध्यान श्रेष्ठ है। ध्यान से भी बढ़कर सब कर्मों के फल का त्याग श्रेष्ठ है, त्याग से तत्काल ही परम शान्ति प्राप्त होती है।

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत।

क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम ।।13।।

हे अर्जुन! तू सब क्षेत्रों में क्षेत्रज्ञ अर्थात् जीवात्मा मुझ को ही जान। क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का अर्थात् विकार सहित प्रकृति और पुरुष का जो तत्त्वरूपी ज्ञान है, वही वास्तविक ज्ञान है, ऐसा मेरा मत है।

मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते।

स गुणान्समतीत्यैतान् ब्रह्मभूयाय कल्पते ।।14।।

जो पुरुष विना किसी विकार के भक्तिभाव से मुझे भजता है, वह इन तीनों गुणों (सत्व, रजस् और तमस्) को लाँघकर ब्रह्म से एकीभाव को प्राप्त होता है।

निर्मानमोहा जितसंगदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः।

द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत्।।15।।

जिनका मान और मोह नष्ट हो गया है तथा आसक्तिरूप दोष जिन्होंने जीत लिया है और जिनकी नित्य स्थिति परमात्मा के स्वरूप में है तथा जिनकी कामना पूरी तरह से नष्ट हो चुकी है, ऐसे ही सुख–दुःख नामक द्वन्द्वों से विमुक्त ज्ञानीजन उस अविनाशी परमपद को प्राप्त होते हैं।

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।

न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ।।16।।

जो पुरुष शास्त्रविधि को त्यागकर मनमाना आचरण करता है, वह न तो सिद्धि को, न परम गति को और न सुख को ही प्राप्त होता है।

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः।

भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते ।।17।।

मन की प्रसन्नता, शान्त भाव, भगवत् चिन्तन करने का स्वभाव, मन का निग्रह और अन्तःकरण के भावों की भलीभाँति पवित्रता –ये सब मानस अर्थात् मन सम्बन्धी तप कहे जाते हैं।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।।18।।

सम्पूर्ण धर्मों को अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मों को मुझमें त्याग कर तू केवल एक मुझ सच्चिदानन्दघन परमात्मा की ही अनन्य शरण को प्राप्त हो। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर।

गीता माहात्म्य

गीतासारमिदं पुण्यं यः पठेत् सुसमाहितः।

विष्णुलोकमवाप्नोति भयशोकविनाशनम्।।

जो पुरुष इस पवित्र गीतासार का एकाग्र चित्त से पाठ करता है, वह पुरुष भय, शोक, जन्म–मरण से मुक्त होकर विष्णुलोक को प्राप्त होता है।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां

योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अष्टादशश्लोकी गीता।।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. गीता किस ग्रन्थ से ली गई है ?
2. गीता में श्रीकृष्ण किसे उपदेश देते हैं?
3. योग किसके दुःख का नाश करता है?
4. मिथ्याचारी पुरुष के लक्षण क्या हैं?
5. त्रिगुणमयी माया कैसी होती है?
6. सभी पापों से मुक्त कौन हो जाता है?

भावात्मक प्रश्न

1. श्रद्धावान् लभते ज्ञानम् का भाव स्पष्ट करें।
2. ईश्वर के परमपद को कौन प्राप्त करते हैं ?
3. मुक्तभाव किसको प्राप्त होता है?
4. शास्त्रविहित विधि को छोड़कर काम करने वाले को क्या हानि होती है?
5. मानस तप से क्या अभिप्राय है?

क्रियात्मक

1. अध्यापक छात्रों को गीता के श्लोक याद करवाएँ।
2. अध्यापक छात्रों को पठित पाठ का सार बताएँ।
3. छात्र अर्जुन को उपदेश देते हुए श्रीकृष्ण का चित्र बनाएँ।

पाठ 6

भारतीय वीरांगना

दुर्गा भाभी

राष्ट्र के स्वतन्त्रता संग्राम में जिन नारियों ने पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर सक्रिय भाग लिया, उनमें दुर्गा देवी का नाम बड़े गर्व के साथ लिया जा सकता है। उन्होंने भगत सिंह राजगुरु, सुखदेव जैसे क्रान्तिकारियों के साथ मिलकर इस आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई, जिसके कारण उन्हें क्रान्तिकारियों में गिना जाने लगा।

इनका जन्म 07 अक्टूबर, 1907 को इलाहाबाद में हुआ, जहाँ इनके पिता न्यायाधीश के रूप में नियुक्त थे। ग्यारह वर्ष की आयु में इनका विवाह भगवती चरण बोहरा से हुआ। पति–पत्नी दोनों क्रान्तिकारी विचारों वाले थे तथा देश को स्वतन्त्र कराना चाहते थे। साण्डर्स वध के पश्चात् पुलिस अधिक सतर्क व सक्रिय हो गई। क्रान्तिकारियों की धरपकड़ की जाने लगी, इससे बचने के लिए एक योजना बनाई गई, योजनानुसार सुखदेव दुर्गा भाभी के पास पहुँचे और उन्हें इस कार्य में सहयोग के लिए अनुरोध किया। दुर्गा भाभी ने तत्काल 'हाँ' भर ली, उन्होंने इस कार्य हेतु 500/– रुपये की आर्थिक मदद भी की तथा अगले दिन अपने बेटे शची को साथ लेकर क्रान्तिकारियों के साथ बाहर जाने की भी स्वीकृति दे दी। बिना किसी हिचकिचाहट के 'हाँ' भर लेने पर सुखदेव को सुखद आश्चर्य हुआ, क्योंकि इस कार्य में थोड़ी सी चूक भी उसके व उसके पुत्र के लिए जोखिम भरी हो सकती थी। दुर्गा देवी जी ने सुखदेव के आश्चर्य को भाँपते हुए कहा, "मैं न केवल एक क्रान्तिकारी की पत्नी हूँ

बल्कि स्वयं भी क्रान्तिकारी हूँ"। योजना के अनुसार अगली रात को भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव दुर्गा भाभी के घर पहुँच गए। फिर प्रातः भगत सिंह ने क्लीनशेव होकर, अंग्रेजी फैल्ट टोपी धारण की तथा शची को गोद में

लेकर रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़े, उसके पीछे दुर्गा भाभी ऊँची हील की सैंडिल पहने, पर्स लटकाए मेम साहब बन कर चल पड़ी, उन दोनों के पीछे–पीछे राजगुरु नौकर बनकर चले। रेलवे स्टेशन पर पहुँचकर भगत सिंह व दुर्गा भाभी पति–पत्नी के रूप में प्रथम श्रेणी के डिब्बे में तथा राजगुरु तृतीय श्रेणी के डिब्बे में सवार हुए। लखनऊ पहुँचने पर राजगुरु उनसे अलग होकर आगरा चल दिए। लखनऊ स्टेशन पर भगवती चरण बोहरा और सुशीला दीदी उन्हें लिवाने आए। इस प्रकार उस विकट परिस्थिति में लाहौर से भगत सिंह व राजगुरु को बाहर निकालने का श्रेय दुर्गा भाभी को ही जाता है।

08 अप्रैल, 1929 को असेम्बली में किए गए बम विस्फोट में भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त गिरफ्तार होकर जेल चले गए। इन्हें छुड़ाने की योजना के तहत किए जा रहे बम–परीक्षण के दौरान भगवती चरण बोहरा की मृत्यु हो गई । मृत्यु की सूचना पाकर दुर्गा भाभी सन्न रह गई, इस वज्रपात को सहन करते हुए तथा अपने पति के अन्तिम दर्शन भी न कर पाने का दंश झेलते हुए दुर्गा भाभी धैर्य और साहस की प्रतिमूर्ति बनी रही। पति की मृत्यु के बाद वे और अधिक तीव्र गति से क्रान्ति कार्यों में लग गई, मानो पति की मृत्यु से क्रान्ति कार्यों में आई कमी को स्वयं पूरा करना चाह रही हो।

मुम्बई के गवर्नर हेली की हत्या की योजना दुर्गा भाभी ने पृथ्वी सिंह आजाद, सुखदेव, शिन्दे और बापट से मिलकर बनाई, परन्तु गलतफहमी के कारण इन लोगों ने पुलिस चौकी के पास एक अन्य अंग्रेज अधिकारी पर गोलियाँ बरसा दीं । बापट ने कुशलता पूर्वक ड्राईविंग करते हुए इन लोगों को पुलिस के हत्थे चढ़ने से बचा लिया।

चन्द्रशेखर आजाद बड़े भाई की तरह दुर्गा देवी का ध्यान रखते थे व अपेक्षित मार्ग दर्शन करते थे। कुछ दिनों के बाद 27 फरवरी, 1931 को इलाहाबाद में जब चन्द्रशेखर आजाद भी शहीद हो गए तो दुर्गा भाभी पर मानो दूसरा वज्रपात हुआ।

दुर्गा देवी के लाहौर और इलाहाबाद के आवासों को अंग्रेज सरकार ने जब्त कर लिया। उसने शची को अपने से दूर कर दिया था। 23 मार्च, 1931 को भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी दे दी गई। इन सब घटनाओं का उनके मन पर गहरा आघात लगा, लेकिन वे निष्क्रिय नहीं हुई । 14 सितम्बर, 1932 को बुखार में तपती हुई दुर्गा देवी को अंग्रेज पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया, 15 दिनों की रिमांड के पश्चात् सबूतों के अभाव में उन्हें रिहा कर दिया गया, परन्तु लाहौर और दिल्ली में उनके प्रवेश पर पाबन्दी लगा दी गई। तीन वर्ष बाद पाबन्दी हटाई गई तब तक इन्होंने प्यारे लाल कन्या विद्यालय गाजियाबाद में शिक्षिका के रूप में कार्य किया। इस दौरान इन्हें क्षय रोग हो गया, फिर भी ये समाज सेवा करते हुए कांग्रेस से जुड़ी रहीं। सन् 1937 में आप दिल्ली कांग्रेस समिति की अध्यक्षा चुनी गईं सन् 1938 में हुई हड़ताल में भाग लेने पर इन्हें पुनः गिरफ्तार कर लिया गया। रिहा होने के बाद इन्होंने अड्यार माण्टेसरी में प्रशिक्षण लिया और सन् 1940 में लखनऊ में पहला माण्टेसरी स्कूल खोला। सेवानिवृत्ति के बाद वे गाजियाबाद में रहीं। उनका सम्पूर्ण जीवन त्याग, आदर्श व समर्पण का प्रतीक है। राष्ट्र को समर्पित दुर्गा भाभी का निधन 14 अक्टूबर, 1999 को हुआ। उनका सम्पूर्ण जीवन भविष्य में भी आदर्श बन कर युवाशक्ति को प्रेरित करता रहेगा।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. दुर्गादेवी का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
2. दुर्गादेवी का विवाह किसके साथ हुआ ?
3. असेम्बली में कब व किसने बम धमाका किया ?
4. साण्डर्स वध के बाद सुखदेव द्वारा क्रान्तिकारियों को सहयोग देने के प्रश्न पर दुर्गादेवी ने क्या विचार व्यक्त किए ?
5. भगत सिंह व राजगुरु को लाहौर से बाहर निकलने में दुर्गा भाभी ने किस प्रकार मदद की ?

भावात्मक प्रश्न

1. पति की मृत्यु होने पर दुर्गादेवी ने क्रान्तिकारी गतिविधियों में कैसी भूमिका निभाई ?
2. शिक्षा के क्षेत्र में दुर्गा देवी का क्या योगदान रहा ?
3. दुर्गा देवी क्रान्तिकारियों की सहायता को क्यों तैयार हो गईं ?

क्रियात्मक

1. अध्यापक कक्षा में अन्य वीरांगनाओं के बारे में चर्चा करें।
2. अध्यापक छात्रों से अन्य वीरांगनाओं की सूची बनाने को कहें।
3. स्थानीय वीर व साहसी बालिकाओं के बारे में कक्षा में चर्चा करायें। जिसमें अध्यापक व छात्र–छात्राओं की सक्रिय भागीदारी रहे।
4. छात्र भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव और चन्द्रशेखर आजाद से सम्बन्धित पुस्तकें पुस्तकालय से लेकर पढ़ें।

प्रेमधारा

उसका ललित प्रवाह लसित सब लोकों में है।
उसका रव कमनीय भरा सब ओकों में है।।
उसकी क्रीड़ा–केलि कल्प–लतिका सफला है।
उसकी लीला लोल लहर कैवल्य कला है।।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' रचनावली : खण्ड–9
पद्य–प्रमोद / 357

पाठ 7 विज्ञानाचार्य डॉ. जगदीश चन्द्र बसु

जगदीश चन्द्र का जन्म 30 नवम्बर, सन् 1858 को बंगाल के मैमनसिंह जिले में हुआ, जो वर्तमान में बांग्ला देश में है। यहाँ इनके पिता डिप्टी मजिस्ट्रेट थे। इनके पिता का नाम भगवान चन्द्र बसु तथा माता का नाम बामा सुन्दरी बसु था। इनके जीवन पर पिता के उदारतापूर्ण व्यवहार का अधिक प्रभाव पड़ा, जिसे उन्होंने अन्त तक निभाया। उनका परिवार शिक्षित एवं धार्मिक विचारों वाला था जिसमें रामायण, गीता एवं महाभारत पढ़े जाते थे। उन्हें कर्ण के जीवन से बहुत प्रेरणा मिली, जिसके आधार पर उन्होंने जीवन में संघर्ष करते रहना सीखा। वे हार से ही विजय का जन्म होना मानते थे।

उनके पिता ने उन्हें अंग्रेजी माध्यम की बजाय बांग्ला व हिंदी की जानकारी रखने पर बल दिया। उन्होंने बालक बसु को बांग्ला स्कूल में दाखिल कराया, क्योंकि उनका कहना था पहले मातृभाषा का ज्ञान होना जरूरी है, बाद में अन्य भाषाओं का।

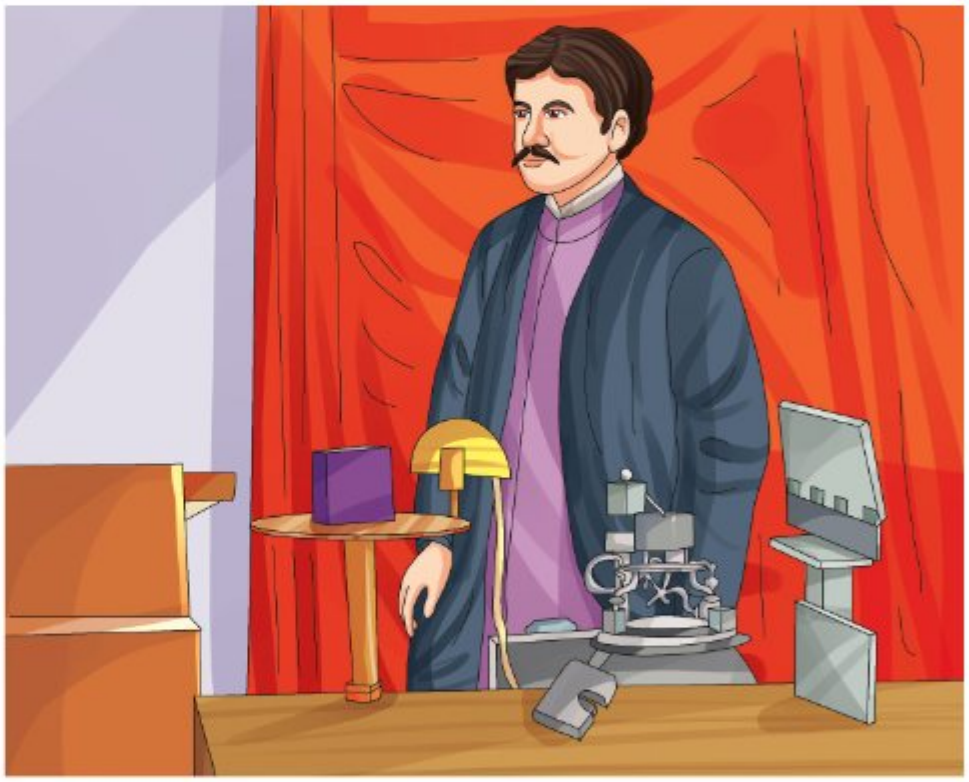

स्कूल में बसु के अधिकांश मित्र गरीब और पिछड़ी जाति के बच्चे थे, जिन्हें देखकर उनके मन में विचार आता था कि आदमी परिश्रम से ही ऊँचा होता है, धन या जाति से नहीं। मनुष्य बल हीन तो आत्मबल के गिरने या नष्ट होने से होता है

प्रारम्भिक अध्ययन के उपरान्त बसु ने अपनी नौ वर्ष की आयु में कलकत्ता के हेयर स्कूल तथा बाद में सेण्ट जेवियर स्कूल में दाखिला लिया।

सेण्ट जेवियर स्कूल में यूरोपीय तथा भारत में रह रहे अंग्रेज छात्र पढ़ते थे। जिनसे बसु ने मित्रता की व उनकी भ्रान्त धारणाओं व चुनौतियों का सामना भी किया। वे विज्ञान की चीजों के बारे में जानकारी एकत्र करने में प्रायः व्यस्त रहते थे।

बसु सन् 1880 में उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैण्ड गए। वहाँ उन्होंने चिकित्सा शास्त्र का अध्ययन शुरू किया ही था कि स्वास्थ्य बिगड़ने के कारण पढ़ाई छूट गई। फिर वे कैम्ब्रिज में क्राइस्ट चर्च कालेज में प्रकृति विज्ञान के अध्ययन में जुट गए। यहाँ के दो अध्यापकों ने उनका मार्गदर्शन किया। ये अध्यापक प्रकृति–विज्ञानी प्रोफेसर सिडनी विनिस और भौतिक विज्ञानी लार्ड रैले थे।

बसु सन् 1885 में शिक्षा पूरी कर भारत लौट आए। उन्हें कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कालेज में भौतिकी का प्राध्यापक नियुक्त कर दिया गया। वहाँ उन्हें अंग्रेज प्राध्यापकों की तुलना में आधे से भी कम वेतन मिलता था। उन्होंने अवैतनिक प्रोफेसर के रूप में कार्य कर इसका विरोध किया। इस अनोखे संघर्ष का परिणाम था कि बसु को गत तीन वर्षों का पूरा वेतन दिया गया।

सन् 1885 में बसु ने शार्ट रेडियो तरंगो की भी खोज की। इन्होंने पटसन के सूक्ष्म रेशों जैसी सूक्ष्म सामग्री से विद्युत तरंगों के ध्रुवण को ग्रहण करने वाले उपकरण बनाने में भी सफलता प्राप्त की। उसकी सहायता से विद्युत् उपकरण रिसीवर तैयार किया। उन्होंने अपने प्रयोगों द्वारा वायु मण्डल में वायरलैस की तरंगों के अस्तित्व को सिद्ध किया। बसु के बेतार का यह आविष्कार सन् 1885 में कलकत्ता 'नगर–भवन' में पुष्टिपूर्ण शोध कार्य मान लिया गया। उन्होंने यह कार्य अपने स्वनिर्मित उपकरणों से विद्युत तरंगों को दो कमरों की दीवार पार करके तीसरे कमरे में पहुँचाकर एक तोप व एक पिस्तौल चलाकर बारूद के ढेर में विस्फोट करके दिखाया। बसु के समय मार्कोनी ने भी अंग्रेजों और यूरोपीय वैज्ञानिकों के सहयोग से लम्बी दूरी तक रेडियो तरंगे भेजने वाला यन्त्र बना लिया था।

इसके बाद जगदीश चन्द्र बसु ने दो वर्ष कड़ी मेहनत करके 'रिसपॉन्स इन द लिविंग एण्ड नॉन लिविंग' नामक मोनोग्राफ छपवाया जिसे देखकर आलोचक विज्ञानी हतप्रभ रह गए। सभी देशों के विद्वान् वैज्ञानिकों ने श्री बसु को आदर्श वैज्ञानिक माना। पौधों के क्रिया विज्ञान पर अनेक देशों में शोधकार्य शुरू कर दिए गए। इससे उनकी ख्याति बढ़ने लगी। उन्हें रॉयल सोसाइटी ने अपना सदस्य बना लिया।

उनका विवाह सन् 1887 के जनवरी में अबला दास के साथ हुआ। वह प्रसिद्ध वकील दुर्गा मोहनदास की पुत्री थी। वह विवाह के समय मद्रास मेडिकल कॉलेज में चिकित्सा शास्त्र का प्रशिक्षण ले रही थी किन्तु इनकी जीवन संगिनी बनने के लिए उसने पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी। वैवाहिक जीवन में इस दम्पती को एक तीव्र झटका लगा। उनके प्रथम नवजात शिशु की मृत्यु हो गई। अबला एक सुचरित्रा समाज–सेविका एवं परिश्रमी महिला थी।

सन् 1896 में बसु यूरोपीय वैज्ञानिकों के निमन्त्रण पर इंग्लैण्ड गए। उनके शोधपूर्ण भाषण और कार्यों की प्रशंसा करते हुए 'फ्रेंच अकादमी ऑफ साइंस' के अध्यक्ष प्रोफेसर ए.कोर्नू ने कहा– 'आपको अपनी प्रजाति की परम्परा को पुनर्जीवित करने का प्रयास करना चाहिए, जो विज्ञान और कला की मिशाल थी। फ्राँस में हम सब आपकी प्रशंसा करते हैं और उत्तरोत्तर उन्नति करते रहने की कामना भी।' उन्हें भारत के महान् सपूत कहकर सम्मानित किया गया।

10 मई सन् 1901 को लन्दन में रॉयल सोसाइटी ऑफ साइंस हाल में बसु ने अपना पेड़–पौधों की संवेदनशीलता का प्रयोग दिखाया। यह प्रयोग देखकर सभी वैज्ञानिक और दर्शक आश्चर्य में डूब गए। वे बसु के शोधपूर्ण विवेचन कार्य की प्रशंसा कर उठे।

इस अवसर पर बसु ने सोसाइटी से कहा– 'यदि वह लेख से सन्तुष्ट नही हैं तो मेरे इस लेख को प्रकाशित न किया जाए, क्योंकि मैं इसमें जरा भी परिवर्तन करने को तैयार नहीं हूँ।' बसु के विभिन्न वैज्ञानिक तर्कों को सुनकर भौतिक विज्ञानी सर रॉबर्ट ऑस्टिन ने कहा– 'मुझे यह जानकर अति खुशी हुई कि धातुओं में भी जीवन होता है, मुझे यह ज्ञान नहीं था'।

बोस शोध संस्थान की स्थापना एवं उनकी अन्तिम इच्छा –

30 नवम्बर, 1917 को 'बोस शोध संस्थान' स्थापना के अवसर पर कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने संस्थान पर काव्यगीत प्रस्तुत किया था। इस अवसर पर बसु ने आगन्तुकों से स्वराष्ट्र को विकसित राष्ट्र बनाए जाने की बात पर बल दिया। उन्होंने घोषणा की– 'हमें पश्चिमी देशों को छोड़कर अपना मूल तथ्य नहीं गँवाना चाहिए। देश के नए आविष्कार ही भविष्य की पूँजी हैं। इसके लिए मैं चाहता हूँ कि समस्त वैज्ञानिकों द्वारा इस संस्थान को सहयोग

दिया जाए व इसे विकसित किया जाए, ताकि उन्हें अपने शोधकार्य में नए सम्बल मिलें तथा अभावों को समझकर वे एक–दूसरे की समस्याओं का समाधान कर सकें।

बसु ने यह भी कहा– 'वैज्ञानिकों का शोध उनका निजी महत्त्व बढ़ाना नहीं, बल्कि मानव को संसाधनों के द्वारा लाभ पहुँचाना होता है।'

डा0 जगदीश चन्द्र बसु को डॉक्ट्रेट की अनेक उपाधियाँ मिलीं। उनका 23 नवम्बर सन् 1937 को मधुमेह एवं रक्तचाप की बीमारियों के कारण निधन हो गया। उस समय वे 79 वर्ष के थे। ऐसे महान् वैज्ञानिक पर देश को गर्व है।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. जगदीश चन्द्र बसु का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
2. बसु के माता–पिता का नाम बताओ ?
3. बसु की प्रारम्भिक शिक्षा कहाँ हुई ?
4. उच्च शिक्षा के लिए बसु कब और कहाँ गए ?
5. बसु का विवाह कब और किसके साथ हुआ ?

भावात्मक प्रश्न

1. जगदीश चन्द्र बसु के दाम्पत्य जीवन पर टिप्पणी लिखें।
2. जगदीश चन्द्र बसु द्वारा विद्युत् तरंग पर किए गए शोध पर प्रकाश डालें।
3. गरीब और पिछड़ी जाति के बच्चों के प्रति बसु के क्या विचार थे ?
4. बसु के जीवन पर पिता के उदारतापूर्ण व्यवहार का क्या प्रभाव पड़ा ?

क्रियात्मक

1. छात्र अध्यापक की सहायता से बसु के शोध कार्यों की विस्तार से जानकारी प्राप्त करें।
2. छात्र पुस्तकों की सहायता से देश के वैज्ञानिकों की जीवनियों के विषय में ज्ञान प्राप्त करें।

पाठ 8

अहिंसा के साधक

महात्मा बुद्ध

महात्मा बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था। सिद्धार्थ का जन्म 562 ई0 पूर्व नेपाल की तराई में स्थित कपिलवस्तु के निकट 'लुम्बिनी' नामक स्थान पर हुआ। इस स्थान पर बाद में सम्राट् अशोक ने एक स्तम्भ स्थापित किया था, जो आज भी विद्यमान है।

शुद्धोधन शाक्य कुल में उत्पन्न एक बहुत बड़े राजा थे। सुख–सुविधाओं और भोग–विलासों की सारी आवश्यक वस्तुएँ उनके यहाँ उपलब्ध थी। दास–दासियों और नौकर–चाकरों की कोई कमी न थी।

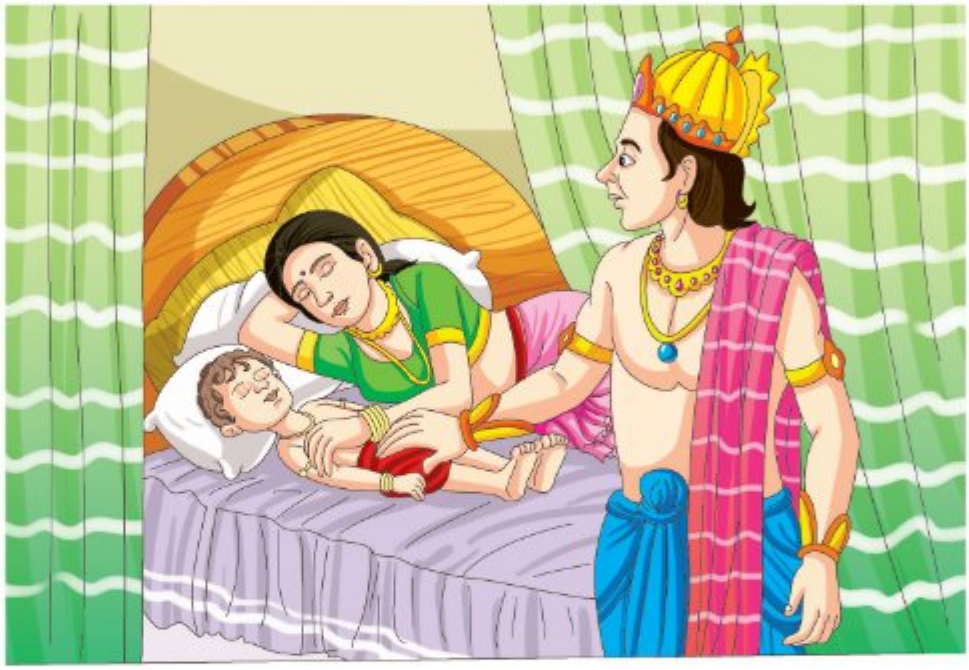

बालक सिद्धार्थ के जन्म के सात दिन बाद ही उसकी माता महामाया का देहान्त हो गया और उसका पालन–पोषण उसकी विमाता, शुद्धोधन की दूसरी पत्नी महाप्रजावती गौतमी ने किया। चूँकि बालक का पालन–पोषण गौतमी ने किया था, इसी कारण ये– गौतम कहलाए।

सिद्धार्थ बचपन से बड़े होनहार एवं गम्भीर प्रकृति के थे। उन में सामान्य बालकों जैसी चंचलता न थी। थोड़े ही दिनों में उन्होंने बहुत विद्या सीख ली थी और खेल–कूद से दूर रहकर एकान्त में बैठे कुछ सोचते रहते थे। करुणा के भाव उनमें जन्म से जागृत थे। देवदत्त उनका चचेरा भाई था। एक बार उसने तीर से एक हंस को मार गिराया । सिद्धार्थ ने उसकी चिकित्सा कर उस हंस की जान बचाई। हंस के लिए दोनों में झगड़ा हो गया। देवदत्त बोला– हंस को मैंने तीर से गिराया है, अतः हंस मेरा है। सिद्धार्थ ने कहा– हंस तड़प रहा था, इसे मैंने बचाया है, अतः हंस मेरा है। अन्त में हंस सिद्धार्थ को ही मिला, क्योंकि बचाने वाला मारने वाले से बेहतर होता है। सिद्धार्थ ने हंस की सेवा की और जब वह स्वस्थ हो गया, तो उसे मुक्त कर दिया।

सिद्धार्थ का पालन–पोषण राजसी वैभव के साथ हुआ। पिता शुद्धोधन ने सुख के सभी साधन उसके लिए जुटा रखे थे, लेकिन सिद्धार्थ का मन सदैव उचाट रहता था। अपने पुत्र की यह दशा देखकर राजा शुद्धोधन ने सिद्धार्थ का विवाह शाक्य कुल की कन्या यशोधरा से कर दिया। विवाह के समय सिद्धार्थ 16 वर्ष के थे, पर सिद्धार्थ का मन सुखी न था। वे चिन्तनशील प्रकृति के थे। एक न एक उधेड़–बुन उन्हें सदा लगी रहती थी। एक

दिन उन्होंने एक बूढ़े को देखा तो सोच में पड़ गए कि एक दिन मैं भी बूढ़ा हो जाऊँगा। एक रोगी को देखकर सोचने लगे कि यह शरीर रोगों का घर है। मैं भी सदा नीरोग नहीं रह सकता। उन्होंने एक अर्थी को देखा तो समझ गए कि यह जीवन सदा नहीं रहने का, एक दिन मुझे भी मरना है। यह सब सोचते–सोचते उनकी युवावस्था का मद चूर हो गया।

एक सन्न्यासी का खिला हुआ चेहरा देखकर सिद्धार्थ पर घर बार छोड़ने की धुन सवार हो गई। रोग, बुढ़ापे और मरण के दुखों से छुटकारे तथा शाश्वत शान्ति की खोज के लिए उन दिनों यही एक राह मानी जाती थी। विवाह के तेरह वर्ष बाद पुत्र हुआ। घर में बहुत खुशियाँ मनाई गयीं। उत्सव मनाए गए, लेकिन सिद्धार्थ को यह खटका सदा लगा रहता था कि इस सुख का क्या ठिकाना, आज है कल नहीं होगा। इसीलिए वह ऐसे सुख की खोज में थे जो सदा एकसा बना रहे। इसी शाश्वत सुख की खोज में एक रात वे अपनी पत्नी और पुत्र को सोया हुआ छोड़कर महल से निकल गए। छः वर्षों की कठोर तपस्या के बाद सिद्धार्थ की साधना सफल हुई और सिद्धार्थ 'बुद्ध' हो गए। जहाँ पर उन्हें बोध हुआ था, वह जगह आज 'बोध गया (बिहार) के नाम से प्रसिद्ध है तथा 'विश्व की अमूल्य धरोहर' के रूप में विख्यात है। जिस पीपल वृक्ष के नीचे उन्हें सत्य का बोध हुआ था, वह 'बोधिवृक्ष' के नाम से प्रसिद्ध आज भी बोधगया में स्थित है।

बोध मिलने पर बुद्ध के मन में विवाद छिड़ गया कि जो बोध मिला है, वह उसे अपने तक ही सीमित रखें या संसार को समझाएँ ? कौन समझेगा ? सब हँसी उड़ाएँगे। पर धीरे–धीरे संशय हट गया। सोचा संसार में एक–तिहाई लोग ऐसे हैं जो ज्ञान से लाभ उठा सकते हैं, परन्तु प्रचार के बिना अज्ञानी ही रह जाएँगे। फिर सवाल उठा कि पहले किसको बतलाएँ ? सिद्धार्थ काशी के पास ऋषिपतन मृगदाव पहुँचे, जिसे आज कल सारनाथ के नाम से जाना जाता है। ऋषिपतन पहुँचने पर बुद्ध को अपने वे पाँच शिष्य मिले जो उन्हें तपस्या–भ्रष्ट समझकर पहले छोड़ आए थे। बुद्ध ने इन्हीं पाँचों को सबसे पहले उपदेश दिया। इसको 'धम्म चक्क पवत्तन' – अर्थात् धर्मरूपी पहिए को चलाना कहते हैं। बुद्ध ने इन ब्राह्मणों को बताया कि जीवन में एक मार्ग अत्यन्त विलास का है और दूसरा अत्यन्त तप का है। एक तीसरा मार्ग भी है जो न अत्यन्त विलास का है और न अत्यन्त तप का, बल्कि दोनों के बीच का है। वह तथागत का देखा हुआ है– उसे सुनो, उसे गुनो। बुद्ध का बताया हुआ यह रास्ता मध्यम मार्ग अर्थात् बीच का रास्ता कहलाता है। बुद्ध ने अष्ट मार्ग का उपदेश दिया।

संक्षेप में अष्टमार्ग की आठ आदर्श बातें इस प्रकार हैं–

1. सम्यक् दृष्टि अर्थात् सत्य व असत्य की पहचान की दृष्टि ।
2. सम्यक् संकल्प अर्थात् बुराई को त्यागने का पवित्र संकल्प।
3. सम्यक् वचन अर्थात् मृदु वाणी बोलना तथा झूठ, निन्दा व अप्रिय वचन का परित्याग।
4. सम्यक् कर्म अर्थात् मनुष्य का कर्म अहिंसा, इन्द्रिय संयम और दयाभाव पर आधारित हो।
5. सम्यक् आजीविका अर्थात् जीवन यापन के लिए उचित एवं पवित्र साधनों का उपयोग।
6. सम्यक् प्रयत्न अर्थात् शारीरिक एवं मानसिक इच्छाओं को त्यागने का प्रयत्न।
7. सम्यक् स्मृति अर्थात् मनुष्य को सदैव ध्यान रखना चाहिए कि उसका शरीर भी नश्वर है।
8. सम्यक् समाधि अर्थात् शाश्वत शान्ति के लिए चिन्तन की समाधि।

महात्मा बुद्ध का कथन था कि मनुष्य इस अष्टमार्ग का अनुसरण करके पुरोहितों के फेर से तथा झूठे आडम्बरों से बच कर निर्वाण या मोक्ष की प्राप्ति करेगा। निर्वाण प्राप्त हो जाने के बाद व्यक्ति न तो जन्म लेता है और न मरता है। महात्मा बुद्ध ने अपनी तपश्चर्या के दौरान चार सत्यों की पहचान की–

1. संसार दुःखों का घर है।

2. दुःखों का मूल कारण मनुष्य की तृष्णा एवं लालसा है।

3. तृष्णा पर विजय पाकर दुःखों से मुक्ति पाई जा सकती है।

4. अष्टमार्ग तृष्णाओं (इच्छाओं) पर विजय पाने का सरल उपाय है।

इस प्रकार महात्मा बुद्ध ने संसार को अज्ञानता के अन्धकार से निकालकर एक नए ज्ञान के संसार में प्रवेश करवाया और 642 ई0पूर्व 80 वर्ष की आयु में कुशीनगर (कसया, जिला देवरिया) शालवन में प्रवास के दौरान जब उनका अन्तिम समय निकट आया तो उनके शिष्य रोने लगे। तब बुद्ध ने अपने प्रिय शिष्य आनन्द को पास बुलाकर उपदेश दिया–आनन्द! मत रो और निराश न हो। जो जन्मा है उसका अन्त भी अवश्य होगा। यह मत सोचो कि मेरे बाद तुम्हारा कोई गुरु नहीं रहेगा। मैंने जो उपदेश दिए हैं, वे ही तुम्हारे गुरु होंगे। इस प्रकार अपने शिष्यों को रोते– बिलखते छोड़ उन्होंने इस नश्वर संसार से सदा–सदा के लिए विदा ली अर्थात् निर्वाण की प्राप्ति की।

बुद्ध ने न तो मन्दिर बनाए न ही स्मारक। उन्होंने न कोई देश जीता न कोई साम्राज्य ही स्थापित किया। उन्होंने लोगों के दिलों को जीतने की कोशिश की थी। इसीलिए आज भी उनकी ज्योति संसार में जगमगा रही है। आज अनेक देशों में बौद्ध धर्म फैला हुआ है।

इस विषय में निम्नलिखित पक्तियाँ पठनीय हैं–

भारत–गगन में उस समय फिर एक वह झण्डा उड़ा,
जिसके तले, आनन्द से, आधा जगत आकर जुड़ा।
वह बौद्धकालिक सभ्यता है, विश्व भर में छा रही,
अब भी जिसे अवलोकने को भूमि खोदी जा रही ।।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. महात्मा बुद्ध का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
2. इनके बचपन का नाम क्या था ?
3. बुद्ध के माता–पिता का क्या नाम था ?
4. जहाँ सिद्धार्थ को सत्य का ज्ञान हुआ, वह स्थान कहाँ है ? और किस रूप में प्रसिद्ध है ?
5. महात्मा बुद्ध ने धर्म का उपदेश कहाँ दिया ?

भावात्मक प्रश्न

1. किस घटना से सिद्ध होता है कि सिद्धार्थ बचपन से ही दयालु थे ?
2. बुद्ध के अष्टमार्ग का स्वरूप स्पष्ट कीजिए ?
3. बुद्ध के द्वारा पहचाने गए चार सत्य क्या हैं ?

4. महात्मा बुद्ध ने घर क्यों छोड़ा ?
5. मध्यम मार्ग से क्या अभिप्राय है ?
6. महात्मा बुद्ध ने अन्तिम समय में अपने शिष्यों को क्या उपदेश दिया ?

क्रियात्मक

1. अध्यापक कक्षा में बुद्ध सरीखे ऐसे महापुरुषों की चर्चा करें, जिन्होंने अल्पायु में सत्य की खोज के लिए राजसी वैभवों को त्याग दिया था।
2. अध्यापक विद्यार्थियों को पुस्तकालय से महापुरुषों के चरित्र अध्ययन करने के लिए कहें।
3. छात्र महात्मा बुद्ध के जीवन की घटनाओं की चित्रावली तैयार करें।
4. छात्र विश्व के मानचित्र पर बौद्ध देशों को अंकित करें।

जीवन–ज्योति

उठो भारत का तिमिर भगा दो।
साधो भव के सिद्धि–मंत्र को सबका बना सगा दो।
निज सुख–दुख समान सब का दुख–सुख समझो न दगा दो।
त्यागो लाग लगन का पौधा निज उर मध्य लगा दो।
कर अनुभव अनुराग राग में मन–तन बसन रँगा दो।
जागो जीवन–हीन जनों में जीवन–ज्योति जगा दो।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' रचनावली : खण्ड–9

पाठ 9

युवा क्रान्तिकारी

मदनलाल ढींगरा

मदनलाल ढींगरा का परिवार सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित था। परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी थी। खूब कमाना और खूब खर्च करना ढींगरा परिवार का सिद्वान्त था। उनका जीवन स्तर नगर के गिने–चुने अमीरों से भी बेहतर था। मदनलाल ढींगरा के पिता साहिब दित्तामल ने मेडिकल स्कूल लाहौर से 1867 में सब असिस्टेण्ट सर्जन की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। ढींगरा परिवार का मूल स्थान जिला सरगोदा स्थित 'साहीवाल' है। यह स्थान पश्चिमी पंजाब की सीमा में आता है। 1850 में ढींगरा परिवार 'साहीवाल' छोड़कर अमृतसर आ गया था और फिर वहीं बस गया।

राय साहब दित्तामल के सात बेटे थे और एक बेटी थी। मदनलाल ढींगरा राय साहब दित्तामल के सबसे छोटे से बड़े बेटे थे। 1887 में अमृतसर में जन्मे मदनलाल ढींगरा बचपन से ही बहुत तेज– तर्रार और परिश्रमी थे। भारत के गिने – चुने चन्द परिवारों में से एक था यह परिवार, जिसने मदनलाल ढींगरा जैसे महान् क्रान्तिकारी को पैदा किया।

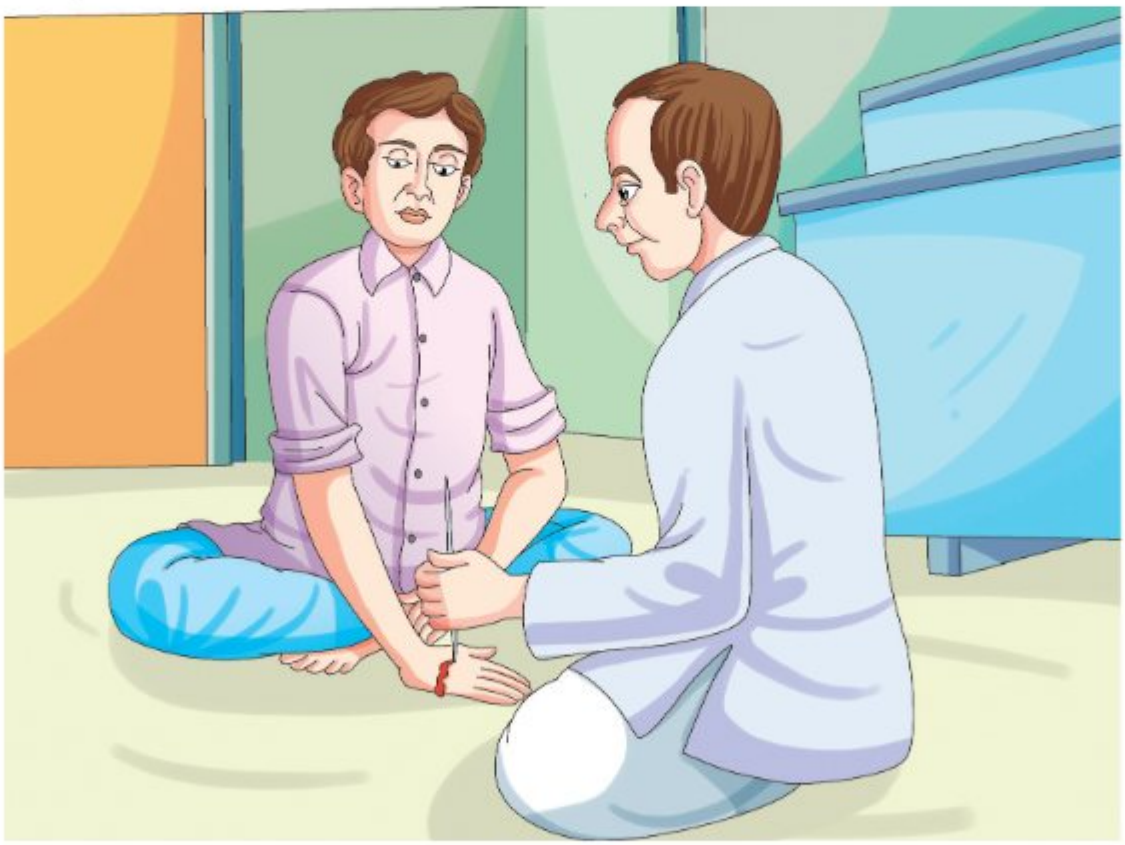

मदनलाल ढींगरा की आरम्भिक शिक्षा कहाँ हुई, इसके बारे में अधिक जानकारी नहीं मिलती। मदनलाल ने अपनी पहली आर्ट की परीक्षा म्युनिसिपल कॉलेज अमृतसर से द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की थी और बाद में उन्होंने गवर्नमेन्ट कॉलेज लाहौर में दाखिला लिया। कालेज की पढाई के दौरान

मदनलाल ढींगरा का ध्यान भारत में अंग्रेज शासकों की क्रूरता की ओर गया। कालेज में गए उन्हें कुछ ही महीने बीते थे कि पिता के कानों में ये शिकायतें आने लगी कि मदनलाल अंग्रेजों से घृणा करता है और भारत में ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध सिर उठाने वाले क्रान्तिकारियों में रुचि ले रहा है।

इसे नियति की विडम्बना कहेंगे या कुछ और कि जिस परिवार का एक–एक सदस्य अंग्रेजों का वफादार था, उसी परिवार में जन्मा मदनलाल अंग्रेजों को उस नजर से देखने को तैयार नहीं था, जिससे घर के अन्य सदस्य देख रहे थे। ढींगरा परिवार पर अंग्रेजों की विशेष कृपा थी। इस परिवार के आधा दर्जन सदस्य ब्रिटिश हुकूमत में भारी प्रतिष्ठा– अर्जित कर रहे थे और मोटी रकम कमा रहे थे। केवल एक सदस्य मदनलाल ढींगरा को पता नही क्यों अपने पिता तथा भाइयों का यह गणित रास नहीं आया।

मदनलाल ने अंग्रेजों को तथा अंग्रेजी शासन को भारत से उखाड़ फेंकने के लिए एकजुट हो रहे क्रान्तिकारियों से हाथ मिला लिया और वह उनकी बैठकों में जाने लगा। पिता रायसाहब दित्तामल को जब यह पता लगा कि उनका बेटा मदनलाल बागी क्रान्तिकारियों की संगत में पड़ गया है तो उन्हें बड़ी चिन्ता हुई। क्रान्तिकारियों से हाथ मिलाने का मतलब था अंग्रेजों की नजरों में गिर जाना और फिर उनके कोप का भाजन बनना। वे जानते थे कि इस देश में अंग्रेजों से वैर करके कोई चैन से नहीं जी सकता। यह रास्ता तो काँटों से भरा है इस पर जो भी चलेगा, वह बर्बाद हो जाएगा और जिस परिवार से वह जुड़ा है, वह भी नहीं बच पाएगा।

राय साहब दित्तामल ने मदललाल का नाम कॉलेज से कटवा दिया और उसे बड़े भाई के साथ व्यापार के काम में लगा दिया। एक दिन उनके बड़े भाई मोहनलाल उन्हें मिले, वे चिकित्सा विज्ञान के मर्मज्ञ थे और अपने कार्य से अच्छा पैसा कमा रहे थे। उन्होंने मदनलाल को उदास देखा तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने अपने छोटे भाई से पूछा– 'मदनलाल, लगता है तुम व्यापार के काम से खुश नहीं हो, शायद तुम पढ़ना चाहते थे और अब तुम्हे इस बात का दुःख है कि तुम्हारी पढ़ाई क्यों छूट गई?' मदनलाल चुप रहे। उनमें हिम्मत नही थी कि जो सच्चाई बड़े भाई उनके मुख से सुनना चाहते हैं, उसे वे कह सकें, लेकिन मोहनलाल ने मदनलाल की चुप्पी का अर्थ समझ लिया और शाम को अकेले में पिता के पास जाकर कहा– "मुझे लगता है कि मदनलाल व्यापार के काम से सन्तुष्ट नही है, उसे अपनी पढ़ाई छूट जाने का दुःख है। वो पढ़ना चाहता है जब हमारे परिवार में सभी ने उच्च शिक्षा प्राप्त की है तो मदनलाल को ही पढ़ाई से क्यों रोका जाए?"

कुछ देर चुप रहने के बाद पिता बोले– "शायद तुम ठीक कहते हो, मैंने उसकी पढ़ाई बीच में छुडवाकर उसके साथ अन्याय किया है। शायद मुझे यह लगा था कि वो व्यापार में अपने बड़े भाई का हाथ बँटाएगा तो व्यापार की कला सीख जाएगा। हमारे देश में व्यापारियों की बुहत कमी है सारा व्यापार अंग्रेजों के हाथ में है, लेकिन यदि तुम्हें यह लगता है कि मदनलाल की इच्छा पढ़ने की है तो मैं उसे पढ़ने से नही रोकूँगा, लेकिन एक बात साफ है कि मैं उसे इस देश में नहीं पढ़ने दूँगा। यहाँ के हालात अब बिगड़ते जा रहे हैं। देश के उत्तरी व दक्षिणी राज्यों में अनेक बागी क्रान्तिकारी पैदा हो गए हैं। यद्यपि पंजाब में उनकी पकड़ इतनी मजबूत नहीं बनी है, फिर भी मुझे डर है कि तुम्हारा छोटा भाई मदनलाल जिसकी राष्ट्रीयता और न्याय में विशेष रुचि है, कहीं किसी बागी के विचार से प्रेरित होकर स्वयं बागी न बन जाए। ऐसा करो, उसे विलायत भेज दो। वह वहीं पढ़े और अंग्रेजी समाज में रहकर अंग्रेजों जैसा विचारवान बने।"

मोहनलाल ने पिता की आज्ञा का पालन किया और मदनलाल का दाखिला ब्रिटेन में करा दिया। इस प्रकार मदनलाल 19 वर्ष की अवस्था में 1906 में ब्रिटेन चले गए और वहाँ के कॉलेज में दाखिला लेकर आगे की पढ़ाई करने लगे। 19 अक्टूबर, 1906 को लन्दन की आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के एक कालेज में मदनलाल को इंजीनियरिंग में दाखिला मिला ।

लन्दन में रहने वाले भारतीय छात्र उन दिनों अपने मनोरंजन के लिए लन्दन के शराबघरों और नाचघरों में जाया करते थे। ऐसे सभी केन्द्रों पर जाते समय सभी भारतीय छात्रों को थोड़ा झिझकना पड़ता था, क्योंकि अंग्रेज युवा उन्हें अपने बराबर का नहीं मानते थे और वे किसी भी क्षण उनका अपमान करते थे। मदनलाल को भी ऐसे अपमान का सामना करना पड़ गया। वे एक वॉलरूम में मनोरंजन के लिए गए थे। वहाँ युवा लड़के–लड़कियाँ नृत्य कर रहे थे। मदनलाल ने किसी अंग्रेज लड़की के साथ नृत्य करने की इच्छा व्यक्त की, परन्तु उसने मना कर दिया। मदनलाल को यह बात सहन नहीं हुई, उन्होंने अंग्रेज लड़कों से पूछ डाला– आखिर इसके पीछे क्या राज है ? हम भारतीय यहाँ पढ़ते हैं और आपका साथ चाहते हैं, इसमें बुरा क्या है? आप भी तो हमारी तरह ही युवा हैं। एक अंग्रेज लड़के ने झट जवाब दिया– नहीं, तुम हमारी तरह नहीं हो सकते ..... तुम गुलाम देश के नागारिक हो और हमारी तरह गोरे भी नहीं हो, इसलिए तुम हमारे साथ डाँस नहीं कर सकते। तुम लोग यहाँ आते ही क्यों हो? क्या तुम्हारे देश में स्कूल नहीं हैं ..... ?

इस उत्तर ने मदनलाल के सीने में आग लगा दी। उन्हें ऐसा लगा जैसे किसी ने उनके अन्दर बारूद भरकर पलीता लगा दिया हो। वालरूम में हुई घटना ने मदनलाल को झकझोर कर रख दिया था। इसके बाद वे कई दिनों तक बुरी तरह बेचैन रहे। फिर उन्हें ध्यान आया कि लन्दन में एक संस्था है, जिसका निर्माण भारतीय मूल के लोगों ने किया है। इस संस्था का नाम है इण्डिया हाउस। इण्डिया हाउस पर केवल भारतीयों का एकाधिकार है। उसमें गोरों का कोई दखल नहीं है, क्यों न वे भी इण्डिया हाउस जाएँ और भारत के लोगों से मिलें ? अगले ही दिन वे इण्डिया हाउस जा पहुँचे। वहाँ उनकी मुलाकात श्यामजी कृष्ण वर्मा से हुई। श्यामजी कृष्ण वर्मा इण्डिया हाउस के संस्थापक थे। इण्डिया हाउस लन्दन में आरम्भ किया गया एक हॉस्टल था, जिसमें केवल भारतीय रहते थे।

इण्डिया हाउस के माध्यम से मदनलाल ढींगरा की मुलाकात वीरसावरकर, महादेव वापट, वीरेन्द्र नाथ चट्टोपाध्याय, हरनाम सिंह अरोड़ा, वी.बी.एस.नैय्यर, गोविन्द, अमीन तथा गंडुरंग आदि क्रान्तिकारियों से हुई क्योंकि इनमें से बहुत से छात्र पढ़ाई से कहीं ज्यादा क्रान्ति को महत्त्व देते थे और क्रान्तिकारी गतिविधियों में संलग्न होने के कारण उनकी पढ़ाई तक छूट चुकी थी।

एक दिन सावरकर ने रात के समय इनके साहस की परीक्षा ली। उन्होंने इनसे दोनों हाथ जमीन पर रखने को कहा। जैसे ही इन्होंने अपने हाथ जमीन पर रखे, उन्होंने सूआ चुभो दिया, जो हाथ को छेदकर पार निकल गया और खून की धार बह चली। मदनलाल ने आह तक नहीं की सावरकर समझ गए थे कि मदनलाल ढींगरा एक दृढ़ संकल्प वाला साहसी युवक है।

1 जुलाई, 1909 नेशलन इण्डियन एसोसिएशन का इम्पीरियल इंस्टीट्यूट में समारोह था। मुख्यतः भारतीय मूल के छात्र, व्यवसायी तथा अन्य लोग एकत्रित थे। कार्यक्रम में भाग लेने के लिए ब्रिटेन की बड़ी–बड़ी हस्तियाँ यहाँ पहुँची थीं। सर विलियम कर्जन विली अपनी पत्नी लेडी विली के साथ समारोह में सायम् 10:30 बजे पहुँचे। सर विली आज बहुत प्रसन्न थे– क्योंकि लम्बी अवधि तक राजनैतिक उथल–पुथल तथा प्रशासनिक उतार–चढावों से दो–चार होने के बाद सर विली अप्रैल के अन्त में अपने वतन पहुँचे थे।

रात के ग्यारह बजे, समारोह के समापन की घोषणा हो गई। सर कर्जन विली अपनी पत्नी का हाथ पकड़े हुए परिचित चेहरों से विदा लेते हुए जहाँगीर हाल से बाहर निकलने लगे, उसी समय एक अपरिचित भारतीय युवक मदनलाल ने सामने आकर उन पर पिस्तौल चलाया, फलस्वरूप उसी समय सर कर्जन विली की जीवन–लीला समाप्त हो गई। मदनलाल पकड़कर जेल में बन्द कर दिए गए। अदालत में मुकदमा चला। श्री मदनलाल ने अपना अपराध स्वीकार करते हुए अपने बयान में कहा कि– "मैं यह स्वीकार करता हूँ कि उस दिन मैंने एक अंग्रेज को

मार डाला है, उनका यह एक साधारण सा बदला है। यह काम करने से पहले मैंने सिर्फ अपनी अन्तरात्मा की राय ली थी। मुझ जैसे गरीब और मूर्ख पुत्र के पास भारत माता को भेंट करने के लिए अपने रक्त के सिवाय और हो ही क्या सकता है ? इसीलिए मैं अपने रक्त की अंजलि भारत माता के चरणों पर चढ़ा रहा हूँ। भारत को इस समय एक ही शिक्षा की आवश्यकता है, जो है– मरना सीखना। उसे सिखाने का केवल एक ढंग है– स्वयं मरना। ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि मैं बार–बार भारत माता की गोद में जन्म लूँ और उसी के उद्धार के लिए प्राण देता रहूँ और यह सिलसिला तब तक चलता रहे जब तक मेरा देश आजाद न हो जाए।'' 17 अगस्त 1909 को भारत के इस महान् सपूत को जेल के अहाते में ही चुपचाप फाँसी पर लटका दिया गया। सावरकर आदि इण्डिया हाउस से जुड़े छात्र चाहते थे कि फाँसी के बाद ढींगरा का शव उन्हें दे दिया जाए जिससे वे अपने साथी का हिन्दू रीति से दाह संस्कार कर सकें, परन्तु उनकी यह बात नहीं मानी गई।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. मदनलाल ढींगरा का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
2. मदललाल ढींगरा के पिता का नाम क्या था? तथा उनकी कितनी सन्तानें थीं ?
3. मदनलाल के पिता ने उनका नाम कॉलेज से क्यों कटवा दिया ?
4. किसके समझाने पर मदन लाल के पिता उसे पुनः शिक्षा दिलाने को तैयार हुए और उच्च शिक्षा के लिए उन्हें कहाँ भेजा गया ?
5. लन्दन के 'इण्डिया हाउस' में मदनलाल ढींगरा की मुलाकात किन–किन भारतीयों से हुई ?

भावात्मक प्रश्न

1. कौन सी घटना ने मदनलाल के हृदय को झकझोर कर रख दिया ?
2. मदनलाल ढींगरा के मन में देश के प्रति क्या भाव था?
3. ढींगरा के मित्र फाँसी के बाद उसके शव को क्यों माँग रहे थे?

क्रियात्मक

1. अध्यापक अपनी कक्षा में विद्यार्थियों को मदनलाल ढींगरा जैसे अन्य युवा क्रान्तिकारियों के बारे में सूची बनवाकर उनके बारे में विस्तार से बताएँ।
2. क्रान्तिकारियों के साहस और राष्ट्रीयता से ओत–प्रोत किस्सों को कक्षा में सुनाएँ ताकि विद्यार्थी अपने राष्ट्र तथा मातृभूमि के प्रति अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करने की प्रेरणा लें।
3. शिक्षक छात्रों को वीर सावरकर तथा अन्य क्रान्तिकारियों से सम्बन्धित पुस्तकें पुस्तकालय से लेकर पढ़ने को कहें।

पाठ 10 शाश्वत नैतिक मूल्य

नैतिकता ही धर्म की आत्मा होती है। इस पर किसी धर्म विशेष का एकाधिकार नहीं होता। विश्व का हर धर्म कुछ ऐसे नैतिक मूल्यों का प्रतिपादन करता है, जिन्हें अन्य धर्म भी उसकी आस्था के साथ स्वीकार करते हैं। नैतिकता वह महासागर है, जहाँ भिन्न–भिन्न धर्मों की नदियाँ आकर मिल जाती हैं। तब एक नया धर्म उत्पन्न होता है, जिसे मानव धर्म कहा जाता है।

नैतिकता तो भेदभाव निरपेक्ष है, सर्वसुलभ और सर्वग्राह्य तथा सबको स्वीकार्य है, इसलिए यह सबकी साँझी सम्पत्ति है। नैतिकता पर सभी धर्मों का उतना ही अधिकार है, जितना माँ की ममता पर उसके प्रत्येक बच्चे का हुआ करता है । नैतिक मूल्य कई सद्‌गुणों के माध्यम से अर्जित होते हैं।

सद्‌गुण को चरित्र का आभूषण कहा जाता है या इसे चरित्र की उत्कृष्टता भी कह सकते हैं। यूनानी दार्शनिक प्लेटो ने चार प्रकार के सद्‌गुणों का उल्लेख किया है –

1. विवेक 2. साहस 3. संयम 4. न्याय

अलेक्जेण्डर के अनुसार सद्गुण समाज सापेक्ष होते हैं, जिस प्रकार व्यक्ति के कर्त्तव्य एवं दायित्व सामाजिक परिवर्तनों के साथ–साथ परिवर्तित होते रहते हैं, उसी प्रकार सद्गुण भी समयानुसार परिवर्तनशील है।

पतंजलि के योगसूत्र में पाँच प्रकार के सद्गुणों का उल्लेख किया गया है –

1. सत्य 2. अहिसा 3. अस्तेय 4. ब्रह्मचर्य 5. अपरिग्रह

इन्हें यम नाम से कहा गया है। यम और नियम अष्टांग योग के महत्त्वपूर्ण घटक हैं।

उपनिषद्, बौद्ध व जैन ग्रन्थों ने भी पतंजलि के सद्गुणों के वर्गीकरण का समर्थन किया। पातंजल योगसूत्र में उल्लेख है– "अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहाः यमाः।

आधुनिक युग में महात्मा गाँधी व विनोबाभावे ने भी उपर्युक्त पाँचों सद्गुणों के महत्त्व को स्वीकार किया है। विभिन्न धर्मों में भी इन सद्गुणों के महत्त्व को किसी न किसी रूप में स्वीकार किया गया है।

सत्य – भारतीय शास्त्रों में सत्य की महत्ता का विशद् वर्णन पाया जाता है। वेदों में कहा गया है कि – सत्य के द्वारा आकाश, पृथ्वी, वायु और भौतिक तत्त्वों को धारण किया जाता है। मनुस्मृति के अनुसार – **'सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्'** अर्थात् सत्य बोलें, प्रिय बोलें परन्तु अप्रिय या कटु सत्य न बोलें। महाभारत के शान्तिपर्व में कहा गया है कि – **सत्यस्य वचनं श्रेयः सत्यादपि हितं वदेत्।** अर्थात् सत्यवादी को मधुरभाषी भी होना चाहिए।

जैन धर्म के अनुसार यथार्थ के साथ–साथ सत्य को प्रिय भी होना चाहिए, इसी को सुनृत व्रत कहा गया है।

गाँधी जी ने तो सत्य को ही ईश्वर और ईश्वर को ही सत्य कहा है।

कुरानशरीफ में स्पष्टरूप से वर्णित है कि "सत्य के आगे असत्य कभी नहीं ठहर सकता"।

ईसामसीह ने बार–बार कहा है कि "जिस व्यक्ति का मन एक बच्चे की तरह निश्छल, सत्यनिष्ठ व पवित्र हो, वही ईश्वर की कृपा का वास्तविक अधिकारी होता है"।

महात्मा बुद्ध ने भी सत्य के महत्त्व को स्वीकार करते हुए अपने शिष्यों से मध्यम मार्ग पर चलने के लिए कहा, जिसके आठ अंग बताए हैं। उनमें से एक है – सम्यक् वचन अर्थात् असत्य, कटु व बुरे वचनों से बचना। वे कहा करते थे कि सत्य और शील व्यक्ति के नैतिक गुण हैं और अनुकरण भी इन्हीं का किया जाना चाहिए।

सिक्ख धर्म – गुरुग्रन्थ साहिब में विभिन्न धर्मों के सन्तों की वाणी है, जो अन्य धार्मिक ग्रन्थों को भी समान महत्त्व देते हैं, आदिग्रन्थ में कहा गया है –

वेद कतेब कहो मत झूठे, झूठा सो जो न विचार।

अर्थात् वेद आदि ग्रन्थों को झूठा मत कहो, झूठा वह है जो इन पर विचार नहीं करता।

अहिंसा अहिंसा को सभी धर्मों में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। संस्कृत की प्रसिद्ध उक्ति है–

अहिंसा परमो धर्मः।

जैन व बौद्ध धर्म में तो इसे धर्म का मुख्य आधार मानते है। अहिंसा के दो मुख्य रूप माने जाते है

1. निषेधात्मक अर्थात् किसी भी प्राणी की हत्या न करना।

2. भावनात्मक अर्थात् सभी प्राणियों के प्रति मैत्रीभाव, दया व सहानुभूति रखना। क्रोध को हिंसा का कारण माना जाता है, इसके लिए जैन मत है कि क्रोध को क्षमा देकर शान्त कर देना चाहिए।

बौद्धमत के अनुसार व्यक्ति को कुशल कोचवान की तरह क्रोध पर अधिकार प्राप्त कर लेना चाहिए।

इस्लाम धर्म में भी क्षमा को अहिंसा का आधार मानकर कहा गया है कि महान् व्यक्ति वह है जो क्षमा करे और भूल जाए।

ईसामसीह का सुप्रसिद्ध कथन है – ''पाप से घृणा करो, पापी से नहीं''।

गुरबाणी में कहा गया है – ''ना कोई बैरी, ना ही बेगाना'' जब कोई अपना वैरी या बेगाना ही नहीं तो हिंसा होगी कैसे। ईसामसीह ने तो किसी से भी प्रतिशोध लेने को ही मना किया है।

कुरानशरीफ में भी स्पष्ट कहा गया है कि–बुराई का बदला बुराई से न लेकर भलाई से लिया जाए तो विरोधी के मन का मैल स्वतः ही समाप्त हो जाता है और हिंसा की सम्भावना ही नहीं रहती।

महात्मा बुद्ध ने धम्मपद में कहा है कि–''न तेन अरिया होति, येनपाणानि हिंसति'' अर्थात् जो प्राणियों की हिंसा करते हैं, वे श्रेष्ठ नहीं हैं।

अस्तेय – अस्तेय का अर्थ है– चोरी न करना या किसी दूसरे की सम्पत्ति को अवैध रूप में अपने पास न रखना। भारतीय नीतिशास्त्र में 'अर्थ' को जीवन का पुरुषार्थ तो बताया है, लेकिन अवैधरूप से अर्थोपार्जन को स्वीकार नहीं किया गया। जैनमत में दूसरे की सम्पत्ति के अपहरण को केवल चोरी ही नहीं बल्कि हिंसा की संज्ञा दी गई है।

बौद्धमत के अनुसार – दूसरे की सम्पत्ति के प्रति लोभ की भावना रखना या दूसरे व्यक्ति को चारी करने के लिए प्रेरित करना भी स्तेय है।

कुरान में कहा गया है:– ' हम वसीला ढूँढें और मेहनत करें।'

अपरिग्रह – अपरिग्रह का अर्थ है–आवश्यकता से अधिक धन संग्रह न करना। जैन और बौद्ध धर्म में इसे मूल सद्गुण स्वीकार किया गया है। महात्मा गाँधी ने भी इस नैतिक मूल्य की अनिवार्यता को स्वीकार करते हुए कहा है कि ''जीवन यापन से अधिक संचय करना दूसरों को जीवित रखने से वंचित करना है।''

श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है कि–प्राणियों की सम्पत्ति उतनी ही होनी चाहिए, जितनी से उनका पेट भर जाए, उससे अधिक धन का संचय चोरी है।

सिक्ख धर्म के तीन मूल नियम है –

1. नाम जपना

2. किरत करना अर्थात् ईमानदारी से परिश्रम करना

3. वण्ड छकणा अर्थात् मिल बाँटकर खाना। मिल बाँटकर खाने से अपरिग्रह की भावना पुष्ट होती है।

ईसामसीह ने भी अपरिग्रह का पक्ष लेते हुए चेतावनी दी है कि आवश्यकता से अधिक धन या ऐश्वर्य का स्वामी, प्रभु के राज्य में प्रवेश नहीं पा सकता।

ब्रह्मचर्य – ब्रह्मचर्य का अर्थ है–काम वासनाओं का पूरी तरह से त्याग। सभी धर्मों ने इसकी महत्ता को स्वीकार किया है। अथर्ववेद में कहा गया है –'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाध्नत'' अर्थात् ब्रह्मचर्य रूप तप से ही देवों ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की।

जैनधर्म में ब्रह्मचर्य का पालन मन, वचन और कर्म से करने पर बल दिया गया है। सूत्रकृतांग में कहा गया है– 'तवेसु वा उत्तमं बंमेचरं।'' अर्थात् तपों में सर्वोत्तम तप है–ब्रह्मचर्य। महात्मा गाँधी ने भी आत्मसंयम को ही ब्रह्मचर्य कहा है। विद्यार्थी के लिए तो ब्रह्मचर्य अति आवश्यक है। इसके बिना विद्याभ्यास सम्भव ही नहीं। इसलिए विद्यार्थी को ब्रह्मचारी कहा जाता है और विद्या प्राप्त करने की अवधि को ब्रह्मचर्य आश्रम नाम से जाना जाता है। बौद्ध धर्म में भी ब्रह्मचर्य के महत्त्व को स्वीकारा है।

उपर्युक्त सभी गुण मिलकर धर्म का स्वरूप बनाते हैं। इसीलिए मनु ने धर्म के लक्षण बताते हुए लिखा है कि –

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. प्लेटो ने किन सद्गुणों का उल्लेख किया है?
2. पतंजलि ने किन सद्गुणों का उल्लेख किया है?
3. कुरानशरीफ में सत्य के बारे में क्या कहा गया है?
4. अहिंसा के सम्बन्ध में ईसामसीह की उक्ति का उल्लेख कीजिए।

भावात्मक प्रश्न

1. जैन धर्म के अनुसार अस्तेय क्या है?
2. सिक्ख धर्म के तीन मूल नियमों का भाव लिखिए।
3. अथर्ववेद में ब्रह्मचर्य का उल्लेख किस प्रकार किया गया है?

क्रियात्मक

अध्यापक की सहायता से छात्र पाठ में वर्णित मूल्यों के अतिरिक्त अन्य नैतिक मूल्यों की सूची तैयार करेंगे।

पाठ 11 गोस्वामी तुलसीदास

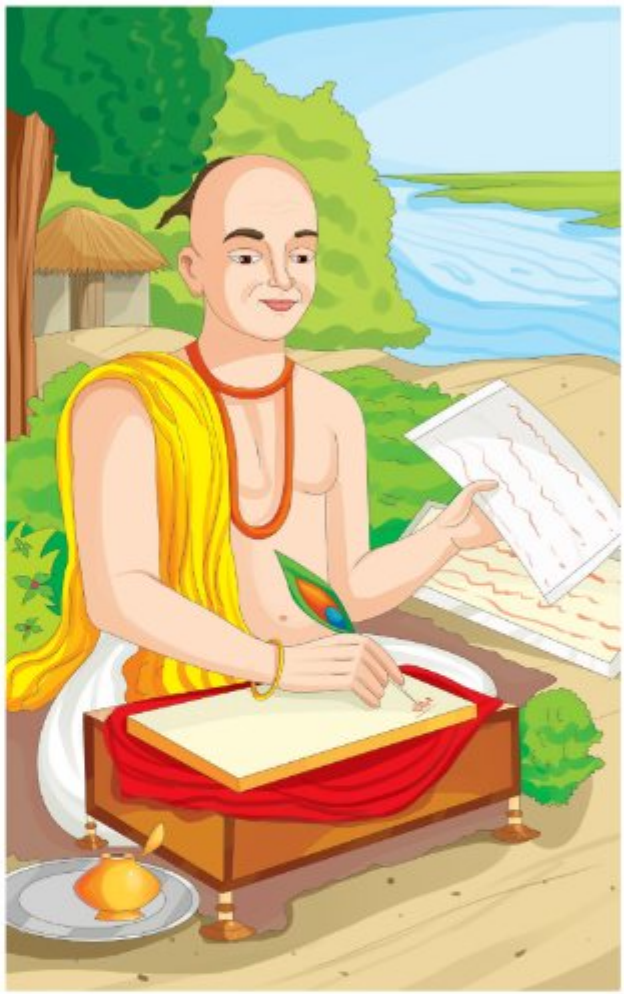

गोस्वामी तुलसीदास रचित ''रामचरितमानस'' में सामाजिक और पारिवारिक परिप्रेक्ष्य में जो आदर्श स्थापित किए गए हैं, वे अन्य किसी ग्रन्थ में दुर्लभ हैं और आज के समय में नितान्त आवश्यक हैं। जैसे– राम की पितृभक्ति, लक्ष्मण का भ्रातृप्रेम, सीता का पातिव्रत धर्म और हनुमान की स्वामी भक्ति इत्यादि ऐसे आदर्श हैं, जो आज के प्ररिपेक्ष्य में लगता है जैसे कहीं खो गए हैं। इन आदर्शों को पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है। इसी उद्देश्य से यहाँ रामचरितमानस के 'बालकाण्ड' से कुछ चौपाइयों का संकलन किया गया है। इन चौपाइयों में रामकथा के महत्त्व के साथ–साथ राम के बाल चरित्र का वर्णन किया गया है जिसमें राम का भाइयों के संग खेलना, मिल बैठकर भोजन करना, माता–पिता की आज्ञा का पालन इत्यादि ऐसे चरित्र हैं जिन्हें पढ़कर व आत्मसात् कर उच्च चरित्र का निर्माण किया जा सकता है।

दोहा –रामकथा सुरधेनु सम, सेवत सब सुख दानि।
सतसमाज सुरलोक सब, को न सुनै अस जानि।।

रामकथा सुन्दर करतारी। संसय बिहग उड़ावनिहारी।।
रामकथा कलि बिटप कुठारी। सादर सुनु गिरिराजकुमारी।।
राम नाम गुन चरित सुहाए। जनम करम अगनित श्रुति गाए।।
जथा अनन्त राम भगवाना। तथा कथा कीरति गुन नाना।।
तदपि जथा श्रुत जसि मति मोरी। कहिहउँ देखि प्रीति अति तोरी।।
उमा प्रस्न तव सहज सुहाई। सुखद सन्त सम्मत मोहि भाई।।
एक बात नहिं मोहि सुहानी। जदपि मोह बस कहेहु भवानी।।
तुम्ह जो कहा राम कोउ आना। जेहि श्रुति गाव धरहिं मुनि ध्याना।।
दोहा – कहहिं सुनहिं अस अधम नर, ग्रसे जे मोह पिसाच।
पाषंडी हरि पद विमुख, जानहिं झूठ न साच।।

बालचरित हरि बहुबिधि कीन्हा। अति अनंद दासन्ह कहँ दीन्हा।।
कछुक काल बीते सब भाई। बड़े भए परिजन सुखदाई।।
चूड़ाकरन कीन्ह गुरु जाई। विप्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई।।

परम मनोहर चरित अपारा। करत फिरत चारिउ सुकुमारा।।
मन क्रम बचन अगोचर जोई। दसरथ अजिर बिचर प्रभु सोई।।
भोजन करत बोल जब राजा। नहिं आवत तजि बाल समाजा।।
कौसल्या जब बोलन जाई। ठुमुक–ठुमुक प्रभु चलहिं पराई।।
निगम नेति सिव अंत न पावा। ताहिं धरै जननी हठि धावा।।
धूसर धूरि भरें तनु आए। भूपति बिहसि गोद बैठाए।।
दोहा – भोजन करत चपल चित, इत उत अवसरु पाइ।
भाजि चले किलकत मुख, दधि ओदन लपटाइ।।
बालचरित अति सरल सुहाए। सारद सेष संभु श्रुति गाए।।
जिन्ह कर मन इन्ह सन नहिं राता। ते जन बंचित किए बिधाता।।
भए कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता।।
अनुज सखा संग भोजन करहीं। मातु–पिता अग्या अनुसरहीं।।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. श्रीरामचरितमानस के रचियता कौन हैं?
2. रामकथा को किसके समान बताया गया है?
3. परिजनों ने कब सुख पाया?
4. राम किनके संग भोजन करते हैं?
5. विधाता ने किन को वंचित किया है?

भावात्मक प्रश्न

1. वेद–पुराणों में ईश्वर के बारे में क्या कहा गया है?
2. भगवान शिव, पार्वती को राम के बारे में क्या बताते हैं?
3. "मन क्रम बचन अगोचर जोई।" से क्या अभिप्राय है?
4. भगवान राम के बाल चरित का वर्णन करो।
5. रामकथा क्या दूर करने वाली है?

क्रियात्मक

1. छात्र कक्षा में अध्यापक के सहयोग से राम के अन्य गुणों की चर्चा करें तथा अपनी अभ्यासपुस्तिका में लिखें।
2. कक्षा में छात्र सस्वर रामायण की चौपाइयों का उच्चारण करें।

पाठ 12 संगठन–सूक्त

ओम् सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इडस्पदे समिध्यसे स नो वसून्याभर ।।। ।।

हे प्रभो! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं, कीजिए धन–वृष्टि को।

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानानामुपासते ।।2।।

प्रेम से मिलकर चलो, बोलो सभी ज्ञानी बनो।
निज पूर्वजों की भाँति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो।।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ।। 3।।
हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हों ।।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ।। 4।।
हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख–सम्पदा।।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. सृष्टि का निर्माण कौन करता है?
2. हमें कैसे रहना चाहिए?
3. वेद में कैसी विचारधारा की कामना की गई है?

भावात्मक प्रश्न

1. सुख सम्पदा कैसे बढ़ती है?
2. संगठन का महत्त्व बतलाइये।

क्रियात्मक

1. छात्र अध्यापक की सहायता से पाठ में आए हुए मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण करना सीखें ।
2. अध्यापक पाठ को गायन के साथ पढ़ाएँ तथा कण्ठस्थ करवाएँ।
3. अध्यापक छात्रों से पारिवारिक सद्भाव सम्बन्धी सूक्तियों का संकलन करवाएँ।

वेदों की उदारता

किसी पर कभी वे नहीं टूट पड़ते।
बखेड़ा बढ़ा कर नहीं वे झगड़ते।
नहीं वे उलझते नहीं वे अकड़ते।
कभी मुँह बनाकर नहीं वे बिगड़ते।
मुँदी आँख हैं प्यार से खोल जाते।
सदा निज सहज भाव वे हैं दिखाते।।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' रचनावली : खण्ड–9

पाठ 13

प्रेरक व्यक्तित्व

लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल

भारतभूमि ऋषि मुनियों एवं महापुरुषों की भूमि है। इस धरा पर ऐसे–ऐसे देशभक्तों ने जन्म लिया जिनकी त्याग तपस्या एवं धैर्यपूर्ण गाथाओं को सुनकर हम गर्व महसूस करते हैं। किसी कवि के अनुसार विपत्ति के समय धैर्य एवं उन्नति के समय क्षमाशील होना दैवी गुण है। वर्तमान काल में चारों तरफ बच्चों से लेकर वृद्धों तक धैर्य का अभाव ही दृष्टिगोचर होता है। धैर्य के अभाव में व्यक्ति अनुशासनहीनता एवं अधिक उतावलेपन के कारण अकस्मात् दुर्घटना का शिकार होता है।

महापुरुषों के धैर्यपूर्ण चरित्रों के माध्यम से विशेषतः युवा–पीढी को धैर्यशाली बनाने की नितान्त आवश्यकता है। मानव को नारियल के फल की भाँति अन्दर से विनम्र एवं बाहर से कठोर होना चाहिए।

महापुरुषों की श्रृंखला में लौहपुरुष सरदार पटेल की सहिष्णुता एवं कर्त्तव्यपरायणता मानव जाति के लिए प्रेरणा स्रोत है। इनका जीवन विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से उपयोगी एवं अनुकरणीय है।

प्रारम्भ से ही सरदार पटेल अपने कष्टों को चुपके से पी जाना जानते थे। एक बार की बात है कि जब वे अदालत में किसी केस की पैरवी कर रहे थे तब उन्हें तार से अपनी पत्नी के निधन का समाचार मिला। केस हत्या का था और वे अभियुक्त की ओर से गवाह से जिरह कर रहे थे। जरा सी असावधानी से अभियुक्त को प्राण दण्ड की सजा हो सकती थी। उन्होंने तार देखा और चेहरे पर शिकन लाए बिना उसे जेब के हवाले कर दिया और अन्त तक अपने कार्य में संलग्न रहे।

शाम को अदालत उठने पर साथियों द्वारा तार के विषय में पूछने पर उन्होंने तार की बात बताई तो वे सभी उनकी कर्त्तव्य परायणता और सहिष्णुता पर स्तब्ध रह गए। पटेल की इस कर्त्तव्य निष्ठा एवं धैर्य को देखकर लोगों ने प्रश्न किया कि आप तार को पढ़कर भी विचलित क्यों नहीं हुए ?

लौहपुरुष का उत्तर था कि– मेरी पत्नी तो इस संसार से चली गई, वापिस नहीं आ सकती परन्तु अदालत में केस की पैरवी के दौरान यदि मैं धैर्य खो बैठता तो केस प्रभावित हो सकता था। यहाँ तक कि अभियुक्त को मृत्युदण्ड भी हो सकता था। अत: मैंने अपनी सहिष्णुता के साथ कर्त्तव्य एवं धर्म की अनुपालना की।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. भारत की भूमि किन पुरुषों की भूमि मानी जाती है ?
2. कवि के अनुसार दैवी गुण क्या है ?
3. मानव की प्रकृति कैसी होनी चाहिए ?
4. सरदार पटेल तार मिलने के समय क्या कर रहे थे ?
5. पटेल तार मिलने पर भी विचलित क्यों नहीं हुए ?

भावात्मक प्रश्न

1. धैर्य के अभाव में क्या हानियाँ से सकती हैं ?
2. केस की पैरवी के समय सरदार पटेल की गतिविधियों का वर्णन कीजिए!
3. अदालत उठने पर पटेल के प्रति लोगों की क्या प्रतिक्रिया थी?
4. पटेल के जीवन से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?
5. सरदार पटेल का जीवन आदर्श क्यों माना जाता है ?

क्रियात्मक

1. अध्यापक के सहयोग से छात्र सरदार पटेल की देश–भक्ति से ओत–प्रोत जीवनी का ज्ञान प्राप्त करें।
2. छात्र पुस्तकों के सहयोग से अन्य महापुरुषों की जीवनियों की जानकारी प्राप्त करें।
3. छात्र पुस्तकालय से सरदार पटेल सम्बन्धी पुस्तकें लेकर पढ़ें और उसका सार लिखें।

पाठ 14

बाल क्रान्तिकारी

करतार सिंह सराबा

भारत भूमि पर ऐसे–ऐसे वीरों ने जन्म लिया है, जिन्होंने अपने शौर्य और पराक्रम से न केवल भारत भू को अपितु पूरी मानव जाति को गौरवान्वित किया है। भारत के स्वतन्त्रता – आन्दोलन में यूँ तो अनेकों वीरों ने अपने प्राणों की आहुतियाँ दी हैं, किन्तु अल्पायु में मातृभूमि पर अपने प्राण न्यौछावर करने वाले बालक्रान्तिकारियों की शृंरवला में करतार सिंह सराबा का नाम बड़े आदर व सम्मान के साथ लिया जाता है।

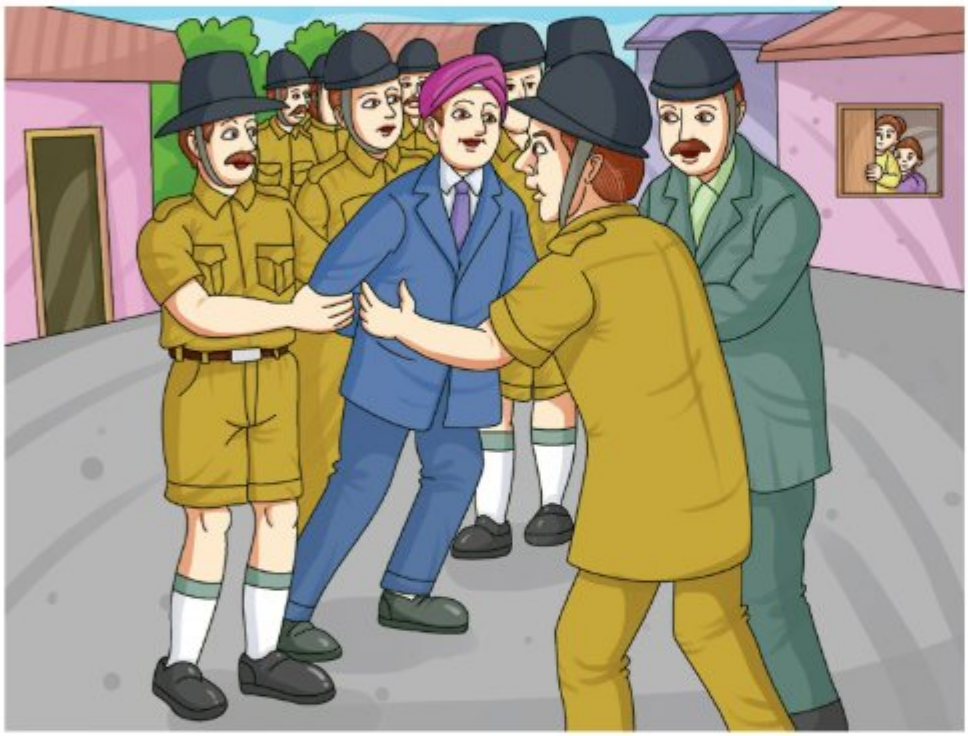

करतार सिंह– देश के महान् क्रान्तिकारी थे, जिन्होंने स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर 1 नवम्बर, 1916 को अपने प्राणों की आहुति दी थी। क्रान्तिकारी आन्दोलन में इन्होंने 20 वर्ष की आयु में महान् कार्य कर दिखाए थे। इनमें देश भक्ति की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी। इनमें अदम्य साहस, आश्चर्यजनक आत्म–विश्वास और आत्म–त्याग था। वह विप्लव (क्रान्ति) के अंगारे थे। उनकी नस–नस तथा रोम–रोम में विप्लव व्याप्त था। जिस दिन वह फाँसी पर चढे, उनके मुखमण्डल पर प्रसन्नता नृत्य कर रही थी और शरीर का वजन 10 पौंड बढ़ गया था। इस प्रकार वह महान् क्रान्तिकारी थे।

करतार सिंह सराबा का जन्म सन् 1896 ई0 में जिला लुधियाना के सराबा नामक गाँव में हुआ था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव की प्राथमिक पाठशाला में हुई, बाद में लुधियाना के खालसा हाई स्कूल में पढ़ने के लिए भेजे गए। देश तथा स्वतन्त्रता प्रेम के भाव आपके ह्रदय में हिलोरें मारने लगे। आपने अमेरिका जाने का संकल्प किया और सन्फ्रान्सिसको बन्दरगाह पर पहुँचे।

उस समय अमेरिका में भारतीयों की कोई इज्जत नहीं थी। अमेरिकन भारतीयों को 'डेम हिन्दू' और 'डेम कुली' कहकर पुकारते थे। तरुण करतार सिंह ने जब ये शब्द सुने तो वह तिलमिला उठे। उधर अपने देश भारत को याद करते तो उसे गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ, लुटा हुआ और असहाय पाते। इन्होंने अपने संकल्प को फौलादी बनाया। सन्फ्रान्सिसको से ही उनके विद्रोही जीवन की शुरूआत हुई। अमेरिका में रहते हुए आपको समाचार–पत्र की आवश्यकता अनुभव हुई और आपने 'गदर' नामक समाचार पत्र निकाला।

बड़े जोरों से प्रचार–प्रसार और संगठन कार्य शुरू हुआ। दिसम्बर, 1914 में पिंगले भी अमेरिका से भारत आ पहुँचे। उनकी प्रेरणा से श्री शचीन्द्रनाथ सान्याल और रासबिहारी बोस पंजाब पहुँचे। विद्रोह की तैयारी में करतार सिंह जोर–शोर से जुट गए। 21 फरवरी, 1915 समस्त भारत में एक साथ विद्रोह करने का दिन निश्चित हुआ था, किन्तु 'घर का भेदी लंका ढाये' वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए एक विश्वासघाती ने धोखा कर दिया। सरगोधा के पास चक नं0 5 में गये तथा फिर से विद्रोह की चर्चा छेड़ दी और वहीं पकड़े गए। जब उन्हें गिरफ्तार किया गया तो वह अत्यधिक प्रसन्न थे। वह प्रायः कहा करते थे– ''साहस से मर जाने पर मुझे बागी का खिताब देना।'' उन्होंने जेल तोड़कर कैदियों को निकालने की योजना बनाई। बेड़ियाँ पहना दी गई। तलाशी में लोहा काटने के यन्त्र करतार सिंह की सुराही के नीचे के स्थान से बरामद किए गए। मुकदमा चला। उस समय करतार की आयु सिर्फ 18 वर्ष की थी।

अपने बयान में करतार सिंह ने कहा– ''मैंने आजादी के लिए भारत में विप्लव करने का षडयन्त्र रचा था, जो कि एक साथी के विश्वासघात के कारण सफल न हो सका। अपने कार्य के लिए मैं फाँसी के ही दण्ड का वरण करूँगा, ताकि मैं शीघ्र ही पुनः जन्म लेकर भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के लिए तैयार हो जाऊँ। जब तक भारत स्वतन्त्र न हो जाए तब तक बार–बार जन्म धारण कर फाँसी पर लटकता रहूँ, यही अभिलाषा है और यदि पुनर्जन्म में स्त्री बना तो भी विद्रोही पुत्रों को जन्म दूँगा।

जब जज ने मृत्यु दण्ड सुनाया तो करतार सिंह ने वीरता पूर्वक मुस्कराते हुए जज से कहा ''आपका धन्यवाद''। 1 नवम्बर, 1916 में वे फाँसी पर लटका दिए गए।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. भारत भूमि पर जन्मे क्रान्तिकारियों की क्या विशेषता है?
2. करतार सिंह का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
3. करतार सिंह ने उच्च शिक्षा कहाँ से प्राप्त की ?
4. करतार सिंह के विद्रोही जीवन की शुरूआत कहाँ से हुई ?
5. करतार सिंह ने अमेरिका में कौन सा समाचार–पत्र निकाला ?

भावात्मक प्रश्न

1. करतार सिंह को जब गिरफ्तार किया गया तो उसकी मनोदशा कैसी थी ?
2. जब करतार सिंह पर मुकदमा चला तो उसके क्या बयान थे ?

क्रियात्मक

अध्यापक कक्षा में छात्रों से करतार सिंह सरीखे बाल–क्रान्तिकारियों की सूची बनवाएँ तथा उनके जीवन के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी दें।

पाठ 15

प्रेरक कहानी

तीन मछलियाँ

एक सरोवर में तीन मछलियाँ रहती थीं। उनके नाम थे अनागतविधाता, प्रत्युत्पन्नमति और यद्भविष्य। उनकी आपस में मित्रता तो थी पर तीनों का स्वभाव अलग–अलग था। अनागतविधाता नामक मछली अपने नाम के अनुरूप बड़ी समझदार थी, कुछ करने से पूर्व वह अच्छी तरह से सोचविचार कर लेती थी तथा भविष्य में आने वाली समस्या या विपत्ति को भाँप कर उससे बचने का उपाय कर लेती थी।

प्रत्युत्पन्नमति नामक मछली बड़ी सूझ–बूझ वाली थी। संकट आने पर तुरन्त अपनी सूझ–बूझ से उससे बचने का रास्ता निकाल लेती थी। तीसरी मछली यद्भविष्य भाग्यवादी थी, वह सोचती थी कि भविष्य में जो होना है, होकर रहेगा, इसके लिए पहले से चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं।

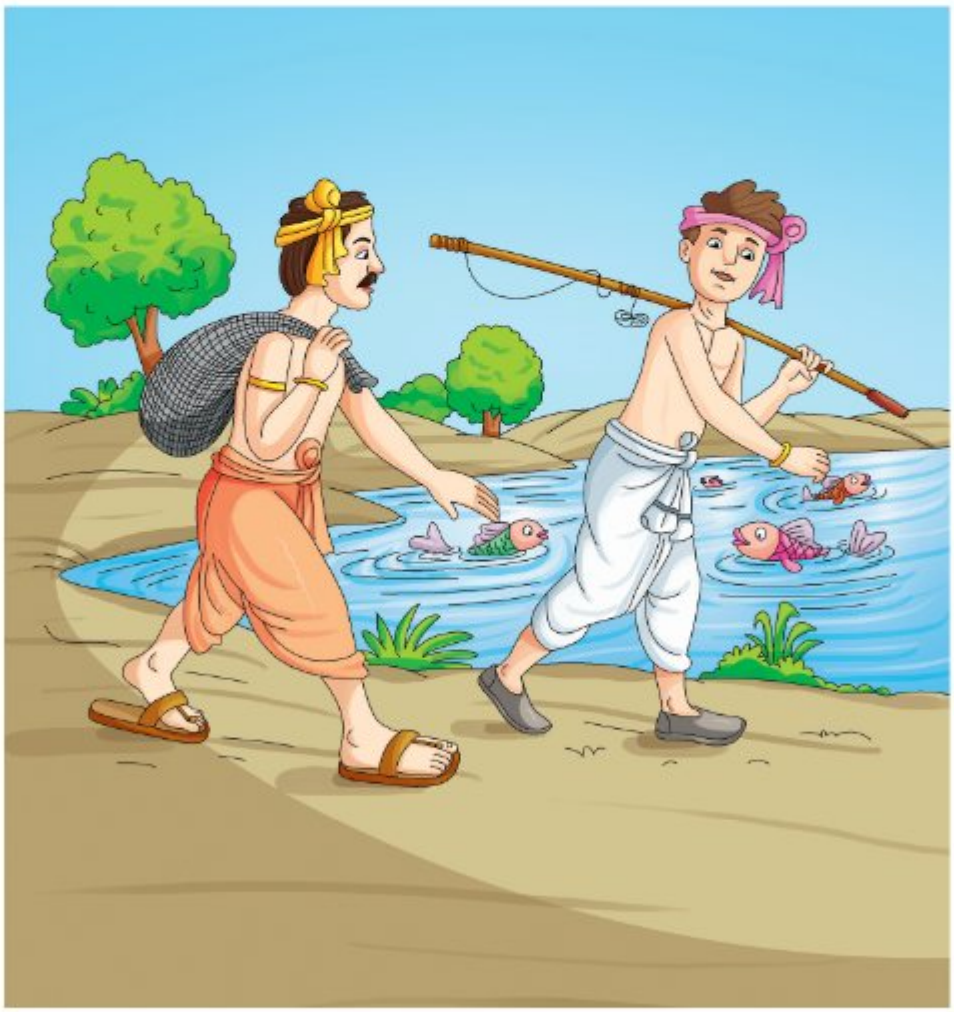

एक दिन उस सरोवर के किनारे दो मछुआरे आए और आपस में बातें करने लगे कि इस सरोवर में ढेरों मछलियाँ हैं। हम कल यहीं आकर मछलियाँ पकड़ेंगे। उनकी बातें सुनकर अनागतविधाता मछली ने अपनी दोनों

मित्र मछलियों से कहा कि समझदारी इसी में है कि हम सब आज रात में ही यह सरोवर छोड़कर नहर के रास्ते दूसरे सरोवर में चले जाएँ। दूसरी मछली ने भी समस्या की गम्भीरता को समझा पर सरोवर छोड़कर जाने की अपेक्षा वहीं रहकर बचने का कोई उपाय सोचने को कहा, जबकि तीसरी मछली यद्भविष्य ने कहा कि अभी से चिन्ता करने का क्या लाभ? जो होगा देखा जाएगा।

अनागतविधाता मछली कोई मुसीबत मोल लेना नहीं चाहती थी अतः वह उसी रात नहर के रास्ते दूसरे सरोवर में चली गई। अगले दिन मछुआरों ने उस सरोवर में जाल डाला। प्रत्युत्पन्नमति मछली ने आई हुई विपत्ति को भाँप कर मरने का स्वांग रचा, वह ऐसी बन गई मानो मरी हुई हो। मछुआरे ने दूसरी मरी हुई मछलियों के साथ उसे भी निकाल कर सरोवर के किनारे फेंक दिया। वह रेंगती हुई पुनः तालाब में चली गई और बच गई।

भाग्य के भरोसे रहने वाली यद्भविष्य मछली जाल में फँस गई और अपने आप को छुड़ाने के लिए उछल कूद मचाने लगी किन्तु अन्त में मार दी गई। केवल भाग्य के भरोसे रहने वाले पुरुषार्थहीन व्यक्तियों का अन्त ऐसा ही होता है।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. कुछ करने से पूर्व अच्छी तरह से सोचविचार करने वाली मछली का नाम क्या था?
2. तुरन्त सूझ–बूझ से काम लेने वाली मछली का नाम क्या था?
3. भाग्य पर ही निर्भर रहने वाली मछली का नाम क्या था?
4. मछुआरों की बात सुनकर अनागतविधाता मछली दूसरे तालाब में क्यों चली गई?
5. भाग्य के सहारे रहने वाले व्यक्तियों को क्या कहते हैं?

भावात्मक प्रश्न

1. अनागत विधाता शब्द से क्या अभिप्राय है?
2. प्रत्युत्पन्नमति शब्द से क्या अभिप्राय है?
3. आपके विचार में सबसे समझदार मछली कौन थी और क्यों?
4. यद्भविष्य मछली का अन्त में क्या हुआ?
5. प्रत्युत्पन्नमति मछली ने बचने का क्या रास्ता निकाला?

क्रियात्मक

"भाग्य के भरोसे न रह कर कर्म करना चाहिए" इस उक्ति पर एक सन्दर्भ (पैरा) लिखिए।

पाठ 16

पर्यावरण

स्वच्छता

स्वच्छता हम सब के स्वस्थ जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक है। प्राचीन काल से ही हमारे देश में स्वच्छता को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है। हमारे ऋषि मुनियों ने भी आन्तरिक एवं बाह्य सभी प्रकार की शुद्धि अर्थात् स्वच्छता पर विचार करने का संकेत दिया है। यथा–योगसूत्र सबसे पहले 'शौच, सन्तोष तप स्वाध्याय ईश्वर–प्रणिधानानि नियमाः' सूत्र के अन्तर्गत शौच अर्थात् स्वच्छता पर विचार करता है। स्वच्छता (शुद्धि) दो प्रकार की होती है– बाह्य शुद्धि एवं आन्तरिक शुद्धि। अपने आसपास के स्थान, खानपान व धनोपार्जन को पवित्र एवं शुद्ध रखना बाह्य शुद्धि है तथा मन, बुद्धि और अन्तःकरण को विद्या, सत्संग, स्वाध्याय, सत्य भाषण व धर्माचरण से पवित्र रखना आन्तरिक शुद्धि है। ये दोनों प्रकार की शुद्धियाँ हमारे सम्पूर्ण जीवन को पवित्र बना देती हैं। आन्तरिक शुद्धि पर हमारे ऋषि मुनियों ने मन्थन करते हुए अनेक शास्त्र लिखे हैं किन्तु हम यहाँ बाह्य शुद्धि के एक अंग स्वच्छता पर विचार कर रहे हैं।

स्वच्छ व्यक्ति मन से प्रसन्न रहता है। स्वच्छता से आस–पास का वातावरण खुशनुमा रहता है। मनुष्य का व्यक्तित्व निखर जाता है। वह अपने नित्य कर्मों को ठीक प्रकार से कर पाता है। स्वस्थ रहने के लिए भी स्वच्छ रहना अति आवश्यक है। स्वच्छ व्यक्ति उत्साह से परिपूर्ण रहता है। यदि स्वच्छता को जीवन में अपना लिया जाए तो अनकूल पर्यावरण में स्वस्थ जीवन जिया जा सकता है।

अस्वच्छता से हानियाँ

अस्वच्छ व्यक्ति के आस–पास कोई नहीं रहना चाहता। वह दूसरों की नजरों से गिर जाता है तथा रोगग्रस्त होकर अपने जीवन की गति को शिथिल (धीमा) कर देता है। अस्वच्छता परस्पर सौहार्द–भाव में बाधा डालती है। अस्वच्छता से पर्यावरण प्रदूषित होने से अनेक प्रकार की बीमारियाँ जन्म लेतीं हैं, जिन पर यहाँ विचार किया जा रहा है –

अस्वच्छता से अनेक प्रकार के बैक्टीरिया जन्म लेते हैं, यथा–

1. **स्टेफाइलोकोकस** (Staphylococcus)

   त्वचा की बीमारियाँ, आँखों का आना अर्थात् आँखों का लाल होना, गला खराब होना, मुँह से लार गिरना। यह बैक्टीरिया मनुष्यों के मल में भी पाया जाता है। इससे फूड प्वाइजनिंग हो सकती है।

2. **सल्मानेला** (Salmonella)

   यह जीवाणु मनुष्य व जानवरों की आँतों व मल में पाया जाता है। यह भोजन में सफाई न रखने से फैलता है। वमन, मरोड़, दस्त बुखार, सिर दर्द, कैंसर, यकृत (Liver) की बीमारियाँ भी इस जीवाणु के कारण होती हैं।

3. **क्लोस्ट्रीडियम** (Clostridium)

   यह बैक्टीरिया मिट्टी में, वातावरण में व पशुओं की आँत में पाया जाता है Botulin नामक Food Poisoning बीमारी होती है।

4. **कैम्पाइलोबैक्टर** (Campylobacter)

   यह पशुओं में पाया जाने वाला बैक्टीरिया है, जो कुत्तों और मुर्गों में पाया जाता है। यह गन्दे भोजन व आसपास की गन्दगी से फैलता है, तथा कई बीमारियों का कारण बनता है।

5. लैड और कैमिकल्स से भोजन जहरीला हो जाता है। जिसे खाने से मनुष्य व पशु दोनों ही बीमार हो जाते हैं। इधर उधर पड़े हुए भोजन व कूड़े में पड़े हुए पोलीथीन को खाने से अनेक गाएँ बीमार होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाती हैं। कूड़े से बीनकर भोजन खानेवाले भी अनेक बीमारियों के शिकार हो जाते हैं।

6. पानी की गन्दगी से भी विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ फैलती हैं। गन्दा पानी त्वचा को प्रभावित करता है। त्वचा पर लाल–लाल चकत्ते, खुजली तथा अन्य बीमारियाँ हो जाती है। गन्दे पानी पर पैदा होने वाले मच्छर मलेरिया, चिकनगुनिया, आदि बुखार फैलाते हैं। गन्दे पानी से उल्टी दस्त, हैजा, पीलिया, बुखार, टाईफाइड आदि रोग होते हैं। इस प्रकार यह हानिकारक कीटाणुओं को फैलाने का स्रोत होता है।

बैक्टीरिया किस प्रकार फैलते हैं –

इनका विशेष कारण गन्दगी होती है, इसके साथ नमी तथा 37–38 डिग्री तापमान में नमीयुक्त भोजन में ये 20 मिनट में दुगुना हो जाते हैं।

जानिए बैक्टीरया के बढ़ने का तीन घंटे का चक्र

समय	जीवाणुओं की संख्या
प्रारम्भ	100
20 मिनट	200
40 मिनट	400
1 घण्टा	800
1 घण्टा 20 मिनट	1600
1 घण्टा 40 मिनट	3200
2 घण्टे	6400
2 घण्टे 20 मिनट	12800
2 घण्टे 40 मिनट	25600
3 घण्टे	51200

स्वच्छता से बचने व स्वच्छता को जीवन में अपनाने के उपाय –

1. सर्वप्रथम अभिभावकों व बालकों को बचपन से स्वच्छ रहने की आदत डालनी चाहिए। अपने सामान को सुव्यवस्थित रखना, शरीर के सभी अंगों को साफ रखना। अपने आस–पास के स्थान की सफाई, अपने बिस्तर की सफाई का ध्यान रखना सिखाना चाहिए।
2. स्वच्छता को अपनी आदत बनाना, पालतू पशुओं को साफ रखना, उन्हें बाँधने के स्थान पर सफाई रखना। उनके पीने के पानी को साफ रखना।
3. दुधारू पशुओं से दूध निकालने के लिए काम आने वाले बर्तनों को स्वच्छ रखना, स्वच्छ भारत अभियान को दैनिक जीवन में शामिल करना।
4. स्वच्छता को जीवन में प्रथम वरीयता देना।
5. अपने आस–पास के लोगों को स्वच्छता के लिए प्रेरित करना।
6. घरों में सूखा–गीला (खाद्य पदार्थों का) कूड़ा अलग–अलग कूड़ापात्रों में डाला जाए।

प्रत्येक भारतीय उपर्युक्त बिन्दुओं पर विचार करे। स्वच्छता को अपने जीवन में महत्त्व देने से हमारी जनसंख्या का एक बड़ा भाग जो स्वच्छता के अभाव में अपने जीवन को खो देता है उसे बचाया जा सकता है। महात्मा गाँन्धी अपने आस–पास के लोगों को अपने व्यवहार द्वारा सफाई का सन्देश देते थे। भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भी 2 अक्टूबर, 2014 को उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए भारत को स्वच्छ बनाने का अभियान प्रारम्भ किया है। तथा 2019 में गान्धी जयन्ती तक भारत को पूर्ण रूप से स्वच्छ बनाने का लक्ष्य रखा है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हम सबका योगदान अत्यावश्यक है।

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. स्वस्थ रहना हमारे लिए क्यों आवश्यक है ?
2. अस्वच्छता से क्या हानियाँ हैं? कोई चार हानियाँ बताइए ?
3. मलेरिया के मच्छरों के उत्पन्न होने का कारण बताइए।
4. गन्दे पानी से क्या–क्या बीमारियाँ होती हैं ?

भावात्मक प्रश्न

1. जीवाणुओं की संख्या किस गति से बढ़ती है ?
2. भोजन जहरीला किससे होता है ?
3. स्वच्छ भारत अभियान प्रारम्भ किसने व कब किया ?
4. स्वच्छ भारत अभियान पूर्ण करने का लक्ष्य कब तक रखा गया ?

क्रियात्मक

1. अध्यापक छात्रों को कक्षा–कक्ष व स्कूल प्रांगण साफ करने के लिए प्रेरित करें।
2. छात्र पढ़े हुए विषय पर घर जाकर माता–पिता तथा परिजनों से चर्चा करें।
3. पाठ में बताई गई बातों को आचरण में लाएँ।

धरती माता

धरती हमारी माता है,
माता को प्रणाम करो।
बनी रहे इसकी सुन्दरता,
ऐसा भी कुछ काम करो।
आओ हम सब मिलजुल कर,
इस धरती को स्वर्ग बना दें।
देकर सुन्दर रूप धरा को,
कुरूपता को दूर भगा दें।

पाठ 17 हेमचन्द्र विक्रमादित्य

प्रकृति का पालना कभी–कभी धरती पर ऐसा अनुपम उपहार छोड़ जाता है, जिसे आने वाली पीढ़ियों तक याद किया जाता है। एक ऐसा ही अमूल्य हीरा हेमचन्द्र विक्रमादित्य जो आज भले ही इस पंच भौतिक देह से हमारे बीच विद्यमान नहीं है किन्तु यशरूपी शरीर से आज भी विद्यमान है और रहेगा। हेमचन्द्र का उपनाम हेमू था । वह इसी नाम से इतिहास में प्रसिद्ध है।

अपने जीवन काल में छोटे–बड़े 22 युद्धों के विजेता रहे रेवाड़ी के हेमचन्द्र विक्रमादित्य (हेमू) की पानीपत के द्वितीय युद्ध के दौरान आँखों में तीर लगने से यदि मृत्यु नहीं हुई होती तो इस लड़ाई में अकबर को चारों खाने चित्त होना पड़ता तथा हेमू की इस जीत से भारत के इतिहास में एक नया मोड़ आता। इन तथ्यों की इतिहास भी पुष्टि करता है।

राय पूरणदास के पुत्र हेमचन्द्र विक्रमादित्य (हेमू) का जन्म अश्विन शुक्ल दशमी, विक्रमी सम्वत् 1556 में अलवर के समीप माछेरी गाँव में एक समृद्ध परिवार में हुआ था। भारतीय जनमानस के हृदय में हेमू का नाम उनकी बहादुरी, देशभक्ति, दूरदर्शिता एवं प्रशासनिक योग्यता के कारण सदैव गौरव का प्रतीक रहा है।

हेमू का परिवार कुछ समय बाद रेवाड़ी के कुतुबपुर में आकर बस गया, जहाँ उनकी पैतृक हवेली आज भी सुरक्षित है। तब रेवाड़ी एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र था तथा ईरान और इराक के व्यापारियों के लिए यह प्रमुख मण्डी थी। शेरशाह सूरी का जन्म नारनौल में होने के कारण हेमू परिवार की उनसे घनिष्ठता थी। हेमू ने यहाँ बारूद बनाने वाले प्रमुख तत्त्व 'शोरे' का व्यापार शुरू कर भारी ख्याति प्राप्त की तथा सूरी की बारूदी आवश्यकताओं को पूरा करने में अहम् भूमिका निभायी। शेरशाह सूरी की मृत्यु के बाद उनके पुत्र इस्लामशाह (सलीम खाँ) सूरी ने गद्दी संभाली। उसने अपनी सेना में राजपूतों व जाटों की भर्ती की। ऐसे में हेमू की विलक्षण प्रतिभा को पहचान कर इस्लामशाह ने उन्हें महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक कार्य सौंपने का निर्णय किया। तत्पश्चात् उनके पदों में उत्तरोत्तर वृद्धि की गई। हेमू ने अपनी कार्यशैली व प्रतिभा से इस्लामशाह को इतना प्रभावित किया कि अनेक अफगान सरदारों की अनिच्छा के बावजूद इस्लाम शाह ने हेमू को 6000 सवारों की मुख्तियारी दी और अमीर का खिताब दिया। एक ओर जहाँ हेमू शत्रुओं को नाकों चने चबवा रहा था, वहीं दूसरी ओर वर्ष 1552–53 में इस्लामशाह ने अपने शत्रुओं व बागियों को सरहिन्द तक खदेड़ कर पंजाब का सैनिक व प्रशासनिक दायित्व पूरी तरह से हेमू को सौंप दिया तथा स्वयं ग्वालियर चला गया। 30 अक्टूबर, 1553 को उसकी मौत हो गई।

इस्लामशाह सूरी की मौत के बाद सूरी सल्तनत में भारी उथल–पुथल मच गई तथा इस्लामशाह के बेटे की हत्या करके मुबारिक खाँ शाही तख्त पर बैठ गया। उसने मुहम्मद आदिलशाह की उपाधि धारण कर ली। आदिलशाह के वजीरे आजम होने के कारण हेमू ने इब्राहिम खाँ, मुहम्मद खाँ, ताज कर्रानी, रूखरवान नूरानी आदि अनेक अफगान विद्रोहियों की बगावत को कुचल कर आदिल के राज्य की सुरक्षा की। आगे चलकर हेमू के नेतृत्व में अफगान शाही सेना ने इब्राहिम खाँ को लगातार दो युद्धों में पराजित किया। पहले कालपी में और फिर खानुआ में। इसके बाद हेमू को आदिलशाह का बंगाल जाने का आदेश प्राप्त हुआ, जहाँ उन्होंने विद्रोही मुहम्मद शाह की सेना का सफाया किया। इस बीच हेमू की अनुपस्थिति का लाभ उठाकर हुमायूं की मुगल सेना ने दिल्ली व आगरा पर आक्रमण कर दिया और अधिकार जमा लिया।

यह समाचार पाते ही सन् 1556 में हेमू ने युद्ध की तैयारियाँ शुरू कर दीं तथा अकबर की सेना को आगरा में करारी शिकस्त दी। इसके बाद हेमू ने दिल्ली की ओर कूच किया। आदिलशाह के लिए हेमू द्वारा मुगल सेना से लड़ा गया यह उनका 22 वाँ युद्ध था। हेमू ने तुगलकाबाद में अपना डेरा जमाया, जहाँ मुगल सेना के साथ उनके नेतृत्व में युद्ध हुआ।

हेमू बड़े साहस एवं वीरता के साथ लड़ा और विरोधियों के छक्के छुड़ा दिए। इस युद्ध में हेमू की जीत हुई तथा उसकी लोकप्रियता दूर–दूर तक फैल गई। आखिरकार आदिलशाह ने हेमू को दिल्ली का राजसिंहासन सौंप दिया तथा उन्हें विक्रमादित्य की उपाधि से भी नवाजा। हेमू ने सम्राट् हेमचन्द्र विक्रमादित्य के रूप में भारतीय राजनीति का नया सूत्रपात किया।

5 नवम्बर, 1556 को हेमू को जब यह समाचार मिला कि मुगल सेना का अग्रिम दस्ता पानीपत के मैदान में पहुँच चुका है तो हेमू भी अपनी पूरी सेना के साथ पानीपत के मैदान में पहुँचा और उसने इस दस्ते को तीन ओर से घेरकर जबरदस्त आक्रमण किया। हेमू अपने हवाई नामक हाथी पर खड़ा होकर शत्रु को ललकारता हुआ अपने सैनिकों का मनोबल ऊँचा कर रहा था। हेमू की सेना ने मुगल सेना की अपने पराक्रम और शौर्य से ऐसी हालत कर दी कि वे मैदान छोड़ने की तैयारी करने लगे थे। वस्तुतः नियति को कुछ और ही मंजूर था और जीती हुई बाजी हार में बदल गई क्योंकि इसी बीच हेमू की बांयीं आँख में एक तीर आकर लगा और उसने युद्ध की दशा और दिशा ही बदल दी। यह तीर उनके सिर के आरपार हो गया। इसके बाद भी हेमू अपनी सेना को प्रोत्सहित

करता रहा। किन्तु इस तीर ने विजय को पराजय में बदल दिया। बाद में हेमू को अचेत अवस्था में मुगल सेना ने बन्दी बना लिया और बैरम खाँ ने हेमू का सिर धड़ से अलग कर दिया।

हेमचन्द्र विक्रमादित्य को बेशक इतिहास के पन्नों पर वह सम्मानजनक स्थान नहीं मिला, जिस पर उसका हक था। इसके बावजूद उसकी वीरता का लोहा अनेक शूरवीरों ने स्वीकार किया है। हेमू ने अपने साहस, शौर्य और पराक्रम से न केवल भारतभू को अपितु पूरी मानव जाति को गौरवान्वित किया है और 'चन्दन है इस देश की माटी' उक्ति को भी चरितार्थ किया है।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. हेमू का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
2. इनके पिता का क्या नाम था ?
3. हेमू का परिवार अलवर से कहाँ आकर बसा ?
4. शेरशाह सूरी की मृत्यु के बाद कौन राजगद्दी पर बैठा ?
5. इस्लाम शाह ने हेमू को कहाँ का दायित्व सौंपा ?
6. हेमू किस की मृत्यु के बाद शाही तख्त पर बैठा ?

भावात्मक प्रश्न

1. हेमू ने आदिलशाह के राज्य की सुरक्षा किन–किन विद्रोहियों से की ?
2. हेमू को आदिलशाह द्वारा बंगाल भेजे जाने पर किसने उसकी गैरहाजिरी में दिल्ली तथा आगरा पर आक्रमण किया और उसका क्या परिणाम हुआ ?
3. हेमू को 'विक्रमादित्य' की उपाधि से कब नवाजा गया ?

क्रियात्मक

1. अध्यापक छात्रों से कक्षा में हेमू जैसे दूसरे रणबाँकुरो की सूची बनवाएँ।

पाठ 18

जगत् की उत्पत्ति

जगत् को सामान्य भाषा में संसार, विश्व आदि नामों से भी जाना जाता है। जगत् की उत्पति कब, कहाँ, कैसे हुई ? यह एक विचारणीय विषय है। जगत् की उत्पत्ति का प्रश्न अत्यन्त गूढ़ है, जिसके रहस्य को समझ पाना अत्यन्त कठिन है।

वैदिक काल से ही जगत् की उत्पत्ति के कारणों को खोजा जा रहा है। ऋग्वेद में कहा गया है –

यो नः पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा

अर्थात् संसार के उत्पति कर्त्ता विश्वकर्मा हमें उत्पन्न करने वाले और पालन करने वाले हैं, ऋग्वेद के 'पुरुष सूक्त' में **पुरुष एवेदं सर्व यद्भूतं यच्च भाव्यम्** के अनुसार विराट् पुरुष से जगत् की उत्पत्ति मानी गई है, जो भूत और भविष्य एवं सब पदार्थों का कर्त्ता है।

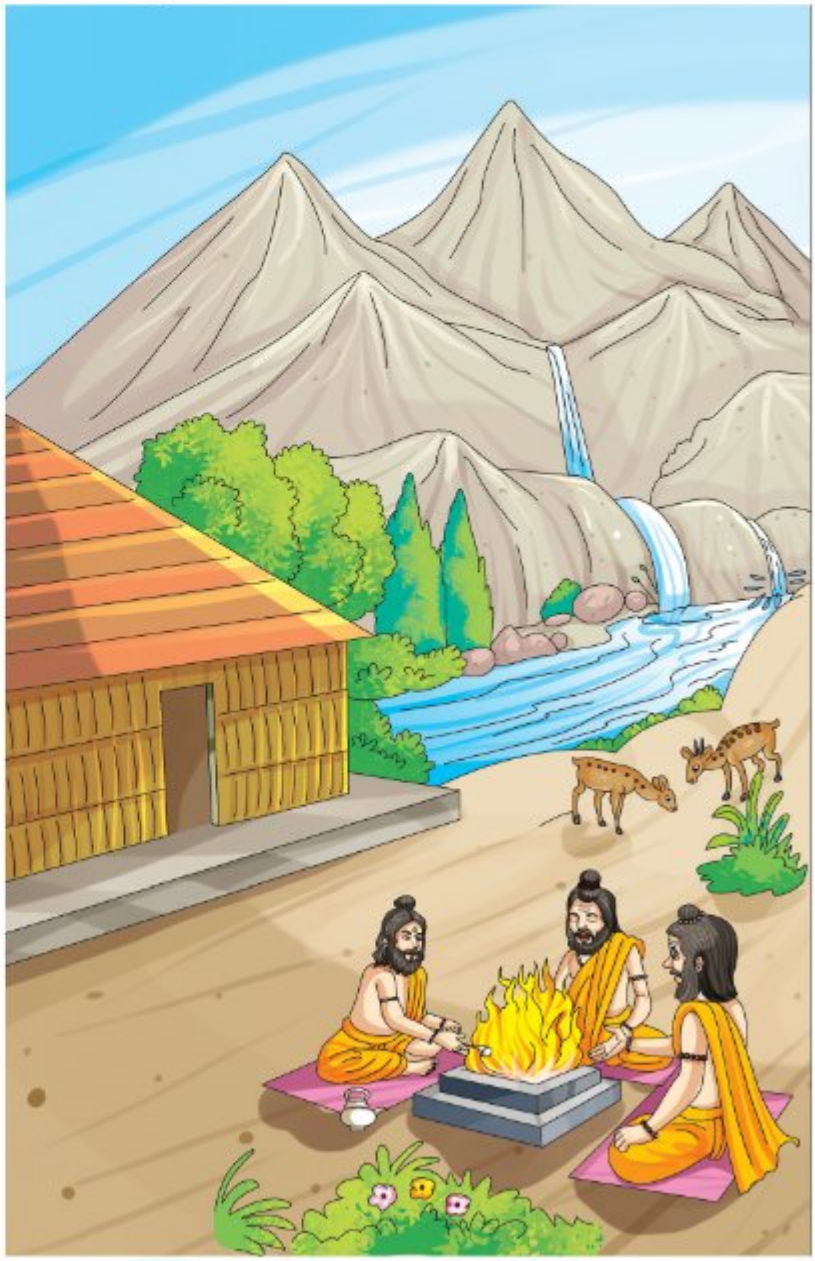

ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में कहा गया है कि सर्वप्रथम चारों तरफ जल ही जल विद्यमान था, तदनन्तर परमात्मा के द्वारा जगत् की रचना की गई। कहा भी गया है –

इयं विसृष्टिर्यत आबभूव
यदि वा दधे यदि वा न।
यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्
सो अंग वेद यदि वा न वेद।।

यह सृष्टि किस प्रकार हुई इसकी रचना किसने की ? इसका जो स्वामी है, वह दिव्यधाम में निवास करता है, वही इसकी रचना के विषय में जानता है, हो सकता है कि ना भी जानता हो।

ईशावास्यमिदं सर्वम्
यत्किंच जगत्यां जगत्

इस मन्त्र के अनुसार जगत् में जो कुछ भी है, वह ईश्वर से व्याप्त है। ईशावास्योपनिषद् के इस प्रथम मन्त्र के अनुसार ईश्वर से जगत् की उत्पत्ति स्वीकार की गई है।

मुण्डकोपनिषद् में मकड़ी का दृष्टान्त देकर परमात्मा के द्वारा इस जगत् की रचना स्वीकार करते हुए कहा गया है –

यथोर्णनाभिः सृजते गृह्णते च, यथा पृथिव्यामोषधयः सम्भवन्ति।

यथा पुरुषात्केशलोमानि तथाक्षरात्सम्भवतीह विश्वम् ।।

अर्थात् जिस प्रकार मकड़ी अपने शरीर के भीतर से जाले का सृजन करती है और फिर उसे अपने शरीर में ही समेट लेती है। जैसे पृथ्वी से ओषधियाँ उत्पन्न होती हैं और पुरुष के शरीर से केश–लोम उत्पन्न होते हैं, उसी प्रकार ब्रह्म से विश्व की रचना होती है। छान्दोग्योपनिषद् में भी एकमात्र ब्रह्म से जगत् की उत्पत्ति मानी गई है। गीता में सृष्टिरचना के विषय में कहा गया है कि –

प्रभवः प्रलयः स्थानं विधानं बीजमव्ययम् अर्थात् इस जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और लय का एकमात्र कारण ब्रह्म ही है। गीता के सातवें अध्याय में श्रीकृष्ण ने कहा है कि– मैं ही इस जगत् की उत्पत्ति और प्रलय का कारण हूँ। मुझसे श्रेष्ठ कोई सत्य नहीं है। जिस प्रकार मोती धागे में गुँथे रहते है, उसी प्रकार सब कुछ मुझ पर ही आश्रित है।

शंकराचार्य ने एकमात्र ब्रह्म की सत्ता स्वीकार करते हुए कहा है – **ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः** अर्थात् ब्रह्म सत्य है और जगत् मिथ्या है, जीव ब्रह्म ही है कोई दूसरा नहीं। अद्वैतमत का यह मुख्य सिद्धान्त है। इसके अनुसार ब्रह्म अपनी माया शक्ति के द्वारा जगत् की रचना करता है और इसकी प्रतीति वास्तविक रूप में न होकर काल्पनिक रूप में होती है।

भारतीय दर्शन दो भागों में विभाजित है – आस्तिक दर्शन और नास्तिक दर्शन। आस्तिक दर्शन के अन्तर्गत षड्दर्शन, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त की गणना की जाती है। नास्तिक दर्शन के अन्तर्गत चार्वाक, बौद्ध और जैन दर्शन प्रसिद्ध हैं। इन भारतीय दर्शनों में भी जगत् की उत्पत्ति के कारणों को विस्तार से दर्शाया गया है।

चार्वाक एक भौतिकवादी और सुखवादी दर्शन है। इसके अनुसार पृथ्वी, जल, तेज और वायु–इन चार भूतों के मिश्रण से समस्त जगत् की उत्पत्ति होती है। इन चार भूतो के अतिरिक्त इस दर्शन में अन्य किसी चेतन तत्त्व की सत्ता स्वीकार नही की गई।

बौद्ध दार्शनिकों के अनुसार – **सर्वस्य संसारस्य दुखात्मकत्वं तत् क्षणिकम्** अर्थात् यह सारा संसार दुःखस्वरूप एवं क्षणभंगुर है। ये जगत् उत्पत्ति कारण के रूप में ईश्वर या आत्मा जैसे किसी तत्त्व की सत्ता स्वीकार नहीं करते। इनके अनुसार जगत् रचना प्रतीत्समुत्पाद अर्थात् कारण–कार्य नियम के आधार पर रूप, विज्ञान, वेदना, संज्ञा और संस्कार–इन पाँच स्कन्धों के मिश्रण से होती है।

जैनदर्शन के अनुसार जगत् दो प्रकार के पदार्थों में विभाजित है– जीव और अजीव। जीव भोक्ता पदार्थ है और अजीव भोग्य पदार्थ है। जैनमत के अनुसार जगत् की रचना परमाणुओं से हुई है।

न्यायशास्त्र के ग्रन्थ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली में कहा है कि– **तस्मै कृष्णाय नमः संसारमहीरुहस्य बीजाय** अर्थात् संसार रूपी वृक्ष का निमित्त कारण ईश्वर है। न्यायशास्त्र में उपादान कारण के रूप में परमाणुओं की सत्ता स्वीकार की गई है। पृथ्वी आदि पाँच भूतों के परमाणु ईश्वर की इच्छा से क्रियाशील होकर जगत् की रचना करते हैं। ये पाँच भूत हैं पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश।

सांख्यदर्शन के अनुसार यह जगत् यथार्थ और सुख–दुःख मोहात्मक है। इनके अनुसार सृष्टि का मूलकारण त्रिगुणात्मक प्रकृति है। ईश्वरकृष्ण ने अपने ग्रन्थ सांख्यकारिका में सत्त्व, रजस् तथा तमस् इन तीन गुणों वाली प्रकृति और पुरुष के संयोग से जगत् की रचना स्वीकार की है।

योगदर्शन का भी जगत् के कारण के विषय में वही मत है, जो सांख्यदर्शन का है। अन्तर केवल इतना है कि योगदर्शन में 'ईश्वरप्रणिधानाद्वा' इस योगसूत्र के अनुसार ईश्वर ने जैसे एक परमार्थ तत्त्व को भी स्वीकार किया है जबकि सांख्यकार इस विषय में मौन है।

गुरुनानक ने 'गुरुग्रन्थसाहिब' में परमात्मा को ही जगत् का निमित्त और उपादान कारण स्वीकार करते हुए 'आसा की वार' नामक ग्रन्थ में कहा है–

आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचियो नाउ।

ईश्वर ने अपने आप ही जगत् को सजाया और अपने आप ही इसे नए रूप में रचा। जपु जी साहिब में भी कहा गया है–

कवणु सु वेला वखतु कवणु कवणु थिति कवणु वारू।

कवणु सु रूति माह कवणु जित होआ आकारू।।

अर्थात् सृष्टि की रचना कब हुई, कैसे हुई यह कोई नहीं जानता।

हिन्दी के कवि सुन्दरदास ने अपने ग्रन्थ 'ज्ञान समुद्र' में जगत् की उत्पत्ति एवं प्रलय का कारण ब्रह्म को माना है।

जो जाते कारय भयो सो ताही में छीन।

ऐसे ही यह जगत् सब होई ब्रह्म महिं लीन।।

दार्शनिक दृष्टि के अन्तर्गत विचार करने के अनन्तर वैज्ञानिक दृष्टि से भी विचार करना उचित है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो पृथ्वी सौरमण्डल का एक अंग है। सौरमण्डल के साथ ही इसका जन्म हुआ है। फ्राँस निवासी कास्तेद बफन ने सन् 1745 ई0 में पृथ्वी की उत्पत्ति पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार करते हुए कहा है कि बहुत वर्षों पूर्व एक बड़ा पुच्छल तारा सूर्य के समीप होकर गुजरा, जिससे दोनों में टक्कर हुई। इस टक्कर से सूर्य से द्रव निकलकर अलग हो गया। कालान्तर में यही द्रव ठण्डा होकर सौरमण्डल की रचना का कारण बना। पदार्थ के जो हिस्से बड़े थे, उनसे ग्रह बने और जो हिस्से छोटे थे, उनसे उपग्रह बने। जर्मन विद्वान् प्रोफेसर कान्त का मत है कि पृथ्वी की उत्पत्ति न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त पर आधारित है।

जगत् की उत्पति के कारण के समान इसका समय ज्ञात करना भी एक गूढ़ प्रश्न है। इसका उत्तर ढूँढने के लिए प्राचीन काल से ही मानव द्वारा चेष्टाएँ की जाती रही हैं। फारस के लोगों का विश्वास है कि पृथ्वी 12,000 वर्ष पुरानी है। हिन्दू धर्म के अनुसार पृथ्वी की आयु दो अरब वर्ष ठहरती है। विष्णु पुराण के अनुसार पृथ्वी को बने 1,97,29,49048 वर्ष हो चुके हैं। अंग्रेजी विद्वान् बी.लेविन ने अपने ग्रन्थ 'दा क्रस्ट ऑफ दा अर्थ' में इस बात को स्वीकार किया है कि पृथ्वी की आयु के सम्बन्ध में हिन्दू धर्म का विचार वैज्ञानिक मत के विचार के आस–पास ही है।

इस प्रकार जगत् की उत्पत्ति के विषय में ऋषियों, सन्तों, तत्त्ववेत्ताओं, दार्शनिकों और वैज्ञानिकों आदि ने अपने–अपने मत प्रस्तुत किए हैं।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. जगत् को सामान्य भाषा में अन्य किन नामों से जाना जाता है ?
2. पुरुष सूक्त में जगत् की उत्पत्ति किस से स्वीकार की गई है ?
3. बौद्धदार्शनिकों के अनुसार जगत् की उत्पत्ति किस कारण से हुई है ?
4. गुरुनानकदेव ने जगत् रचना का कारण किसे माना है ?
5. वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जगत् की उत्पत्ति किससे मानी गई है ?

भावात्मक प्रश्न

1. वैदिक काल के अनुसार जगत् की उत्पत्ति किन कारणों से मानी गई है ? वर्णन करें ।
2. भारतीय दर्शनों के अनुसार जगत् की उत्पत्ति का वर्णन करें ।
3. गीता के अनुसार जगत् की उत्पत्ति के कारणों का वर्णन करें ।
4. वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जगत् रचना का वर्णन करें ।
5. जगत् की उत्पत्ति का समय क्या माना गया है ? इस विषय में विभिन्न मत दें ।

क्रियात्मक

1. अध्यापक की सहायता से छात्र सौरमण्डल की रचना के बारे में जानकारी प्राप्त करें।
2. विद्यार्थी सौरमण्डल का चार्ट तैयार करें।
3. विद्यार्थी ग्रहों एवं उपग्रहों की सूची तैयार करें।

पाठ 19

पारस्परिक सद्भावना

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।। गीता 3/11

देवान्, भावयत, अनेन, ते, देवाः, भावयन्तु, वः,
परस्परम्, भावयन्तः, श्रेयः, परम्, अवाप्स्यथ।।

देवों को उन्नत करो यज्ञ से,
करेंगे तभी उन्नत तुम को भी वे।
जो आपस में करते रहो ऐसा ही,
परम पद को पा जाओगे तुम तभी।।

भावार्थ –

अध्यापक और माता–पिता के प्रति पारस्परिक स्नेह, सद्भाव और सम्मान का भाव। हमारी भारतीय संस्कृति में इनकी भूमिका देवतुल्य है ही। उनकी प्रसन्नता का कारण बनें, परेशानी का नहीं। प्राकृतिक संसाधनों के सदुपयोग, प्रदूषण मुक्ति एवं राष्ट्र गौरव के लिये भी महत्त्वपूर्ण प्रेरणा है यह गीता श्लोक।

प्यारे बच्चो! इस श्लोक को देखकर अथवा पढ़कर आपको आश्चर्य हो सकता है कि गीताजी का यह श्लोक तो यज्ञभाव तथा देवताओं की तुष्टि पुष्टि का है–हमारा इससे क्या सम्बन्ध? हमें तो अभी पढ़ना है। केवल देखने–पढ़ने से ऐसा लग सकता है, लेकिन गीता–ग्रन्थ की तो दिव्यता यही है कि इसकी प्रेरणायें हर दृष्टि से बहुत व्यापक चिन्तन लिये हुए हैं। देवता का वैचारिक अर्थ है–जो देता है, जैसे सूर्य, चन्द्रमा, वायु, धरती, वरूण, अग्नि आदि देवता–सब दे रहे हैं। इस दृष्टि से आप सोचें! अध्यापक हमें शिक्षा देते हैं, हमारे जीवन को अच्छा बनाने में प्रयासरत रहते हैं। माता–पिता जन्म देते हैं, हमारा लालन–पालन करते हैं। स्वयं कठिनाइयाँ सहकर भी हमें आगे बढ़ाने का प्रयास करते हैं–हमारे लिये देवतुल्य हैं ।

अब इस श्लोक को पुनः देखें ! अध्यापक हमें उन्नत करने का प्रयास कर रहे हैं– हम भी उनको प्रसन्न रखें। उनका सम्मान करें। अध्यापकों का सम्मान, उनके प्रति विनम्रता का भाव हमारी अच्छी शिक्षा और अच्छे जीवन में उन्नति का बहुत बड़ा सम्बल बनेगा। परस्परं भावयन्तः अर्थात् एक दूसरे के प्रति ऐसे पारस्परिक सद्भाव से कार्य सिद्धि अर्थात् कार्य में सफलता अवश्य होगी।

इसी प्रकार माता–पिता के साथ भी पारस्परिक सूझबूझ बनी रहे। उनका स्नेहभाव हो, अच्छी बात है, लेकिन साथ ही आप भी निश्चय करें कि हमें उनकी परेशानी का नहीं, प्रसन्नता का कारण बनना है। वस्तुतः यह गीता श्लोक हर रूप में बहुत उपयोगी तथा आज की बहुत बड़ी आवश्यकता है।

आज प्रदूषण बढ़ रहा है, प्रकृति असन्तुलित हो रही है, इसमें हम सहयोगी भूमिका बनायें। जहाँ भी हो, स्वच्छता का ध्यान रखें। जिससे पर्यावरण प्रदूषित हो, गन्दगी फैले, ऐसा कुछ न करें। प्रकृति बहुत कुछ दे रही है, हम केवल लेने के भाव अर्थात् अपने स्वार्थ, अपने सुख के लिये ही जब जीव हत्या, दूसरे प्राणियों को कष्ट या प्राकृतिक संसाधनों का शोषण अथवा दुरुपयोग करते हैं, तो ही समस्यायें बढ़ती हैं प्राकृतिक असन्तुलन होता है !

यही पारस्परिक भाव राष्ट्र के प्रति भी हो। देश की माटी ने हमें बहुत कुछ दिया है, हम भी अच्छे नागरिक बन कर राष्ट्र का गौरव बढ़ायें। नगर सुन्दर बनें, यह अच्छा है, लेकिन नागरिक अच्छे सुसंस्कारित बनें–यह आवश्यक है। आओ, इसकी शुरूआत हम अपने से करें।

यह भी सोचें कि जीवन और जीवन में सब कुछ ईश्वर का दिया हुआ है। शरीर की बनावट देखें या संचालन–सबके पीछे ईश्वरीय चेतना शक्ति स्पष्ट अनुभव होगी। ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का भाव बनायें। जिससे कुछ पाया है, उसके प्रति कृतज्ञता भारतीय संस्कृति का मूल भाव है। इससे अपना मन भी शान्त सन्तुष्ट होगा तथा ईश्वरीय प्रसन्नता का लाभ भी स्वाभाविक मिलेगा।

गीताजी का यह श्लोक पारस्परिक सद्भावना एवं अपने साथ–साथ हर क्षेत्र की उन्नति का बहुत बड़ा सम्बल बन सकता है, मन की संकीर्णतायें छोड़े, खुले मन से इसे स्वीकारें।

आओ विचार करें –

1. इस श्लोक का भावार्थ क्या है ?
2. देवता का अर्थ क्या है तथा अध्यापक और माता पिता को क्यों देवतुल्य माना जाता है?
3. अध्यापकों के प्रति क्या कर्त्तव्य है और उसका लाभ क्या है ?
4. माता पिता के प्रति कैसा पारस्परिक सद्भाव हो ?
5. प्राकृतिक सन्तुलन और प्रदूषण मुक्ति के लिये यह श्लोक कैसे उपयोगी है ?
6. इस गीता प्रेरणा के द्वारा हम कैसे राष्ट्र गौरव बढ़ाने में सहयोगी हो सकते हैं ?
7. ईश्वर के प्रति कृतज्ञता क्यों आवश्यक है तथा इसका क्या लाभ है ?

शुद्ध सात्त्विक 'आहार'; अभक्ष्य–भक्षण (मॉंसाहार–Nonveg) एवं किसी प्रकार का नशा बिल्कुल नहीं। खाने के लिए नहीं जीयें, स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर जीने के लिये खायें, क्योंकि स्वास्थ्य जीवन का अमूल्य धन है।

चन्दन है इस देश की माटी

चन्दन है इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा–बच्चा राम है।।
हर शरीर मन्दिर सा पावन,
हर मानव उपकारी है,
जहाँ सिंह बन गये खिलौने,
गाय जहाँ माँ प्यारी है।
जहाँ सवेरा शंख बजाता, लोरी गाती शाम है।। १ ।।
जहाँ कर्म से भाग्य बदलते,
श्रम–निष्ठा कल्याणी है,
त्याग और तप की गाथायें,
गाती कवि की वाणी है।
ज्ञान यहाँ का गंगा जल–सा, निर्मल है अविराम है।।२।।
इसके सैनिक समर, भूमि में,
गाया करते गीता हैं,
जहाँ खेत में हल के नीचे,
खेला करती सीता हैं।
जीवन का आदर्श यहाँ पर, परमेश्वर का धाम है।।३।।